रजिस्ट्री सं. डीएल(एन)-04/0007/2003--05

REGISTERED No. DL(N)-04/0007/2003—05

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

साप्ताहिक/WEEKLY

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 15] नई दिल्ली, शनिवार, अप्रैल 10—अप्रैल 16, 2010 (चैत्र 20, 1932)

No. 15] NEW DELHI, SATURDAY, APRIL 10—APRIL 16, 2010 (CHAITRA 20, 1932)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

पृष्ठ सं.

भाग I—खण्ड-1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं..... 689

भाग I—खण्ड-2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं..... 283

भाग I—खण्ड-3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं..... 1

भाग I—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं..... 547

भाग II—खण्ड-1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम..... *

भाग II—खण्ड-1क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ..... *

भाग II—खण्ड-2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट..... *

भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल है)..... *

भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं..... *

भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिसमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)..... *

भाग II—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश..... *

भाग III—खण्ड-1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं..... 869

भाग III—खण्ड-2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं और नोटिस *

भाग III—खण्ड-3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं..... *

भाग III—खण्ड-4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं..... 1997

भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस..... 127

भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला सम्पूरक..... *

*आंकड़े प्राप्त नहीं हुए।

CONTENTS

	Page No.
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	689
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	283
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence	1
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	547
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1A—Authoritative texts in Hindi language, of Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministry of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	*
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	869
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	*
PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	*
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	1997
PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies	127
PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi	*

*Folios not received.

भाग I — खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

[(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गईं विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं]

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 2010

संख्या 52-प्रेज/2010--राष्ट्रपति, निम्नलिखित कार्मिकों को उनकी उत्कृष्ट बहादुरी के लिए "कीर्ति चक्र" से सम्मानित करने की स्वीकृति प्रदान करती हैं :--

1. श्री रेल देव सांगमा, सिपाही, विशेष आपरेशन दल मेघालय पुलिस का सदस्य (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 07 दिसम्बर, 2008)

07 दिसम्बर, 2008 को मेघालय पुलिस के सिपाही श्री रेल देव सांगमा को "लिबरेशन ऑफ अचिक इलटि फोर्स" (एल ए ई एफ) के उग्रवादियों को पकड़ने के लिए लगाया गया। गांव के संदेहास्पद घर पर आक्रमण दल के चार सदस्य एक दूसरे को सुरक्षा प्रदान करते हुए पहुँचे । श्री सांगमा जो आगे थे उन्होंने छिपे हुए उग्रवादियों को जोर से आवाज दी और उन्हें बाहर निकलने और अपने हथियार/गोलाबारूद सौंप देने को कहा। अचानक पुलिस दल पर अंदर की ओर से गोलीबारी शुरू हो गई। आक्रमण दल ने आत्मरक्षा में जवाबी कार्रवाही शुरू की। श्री सांगमा ने युक्तिसंगत चाल बदली और ऐसी जगह कूद कर पहुंच गए जहां से वे उग्रवादियों को देख सकते थे और उन पर सीधे गोलीबारी कर सकते थे। उन्होंने एक उग्रवादी को मारा और उसे विफल करने में सफल हो गए। उन्होंने अपने दल से गोलीबारी से उन्हें सुरक्षा पहुंचाते हुए आगे बढ़ने को कहा। इसी बीच, उग्रवादी बाहर की ओर भागने लगे और पुलिस दल के ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी करने लगे जिसमें से एक गोली श्री सांगमा को लगी। श्री सांगमा मौके पर ही दिवंगत हो गए। इस मुठभेड़ के दौरान भी श्री सांगमा फायरिंग लाइन में ही बने रहे और उग्रवादियों को रोकने के लिए अपने अन्य साथियों के लिए मार्ग प्रशस्त करते रहे। मारे गए उग्रवादी की शिनाख्त एल ए ई एफ के स्वयंभू कमांडर के रूप में हुई। पुलिस दल एक उग्रवादी को पकड़ने में भी कामयाब हो गया।

श्री रेल देव सांगमा ने उत्कृष्ट बहादुरी, साहस का प्रदर्शन किया और कर्तव्यपरायणता का निर्वाह करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया।

2. आई सी-65685 मेजर पुष्पेन्दर सिंह, राजपूताना राइफल्स, 28 असम राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 06 मार्च, 2009)

06 मार्च, 2009 को मेजर पुष्पेन्दर सिंह ने एक आतंकवादी समूह के शीर्ष नेतृत्व की उपस्थिति के बारे में पुख्ता खबर के आधार पर मणिपुर, इम्फाल के सामान्य क्षेत्र में इम्फाल पुलिस के कमांडों के साथ संयुक्त आपरेशन शुरू किया।अंदरूनी घेरा डालते समय पुलिस दल पर भारी गोलाबारी शुरू हो

गई और 07 मार्च, 2009 को लगभग 1.30 बजे आंतकवादियों द्वारा वह घेर लिया गया। अफसर ने मौके का तत्परता से जायजा लिया और भागने के सभी रास्ते बंद कर दिए। प्रेरणादायक नेतृत्व प्रदान करते हुए वह लक्ष्य क्षेत्र की ओर बढ़ने लगे जहां उन्होंने देखा कि दो आंतकवादी अंधाधुंध गोलीबारी कर रहे हैं। अधिकारी मौत से बाल-बाल बच गए और तेजी से जवाबी कार्रवाई करते हुए, अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना बुरी तरह फंसे दो आतंकवादियों पर फायरिंग करने लगे और बड़े करीब से गोलियों की बौछार करके उन्हें मार गिराया।

अफसर ने रेंगते हुए छिपे हुए जगह के अंदर स्वयं ही हथगोला फेंक दिया जहां से दो और आतंकवादी गोलीबारी कर रहे थे। अचानक तभी एक आतंकवादी बाहर निकला और अंधाधुंध चारो तरफ फायरिंग करने लगा। अफसर ने तुरंत मौके का फायदा उठाया और अचूक निशानेबाजी से उसे मार गिराया। बहादुर अफसर और आगे तक रेंगते हुए गया और दूसरा गोला फैंक दिया। जान पर भारी संकट होने के बावजूद उनके छिपने वाली जगह के भीतर जबरदस्ती प्रवेश कर गया। अंदर छिपे हुए आतंकवादी ने गोलीबारी शुरू कर दी। अफसर ने बहादुरी से आतंकवादी के ऊपर गोलीबारी की और उसे मार गिराया।

मेजर पुष्पेन्दर सिंह ने आतंकवादियों से लड़ते हुए अनुकरणीय नेतृत्व, आक्रामक शक्ति,अदम्य साहस और अद्वितीय वीरता का प्रदर्शन किया।

3. **श्री भोपाल सिंह, उप निरीक्षक (सामान्य ड्यूटी) सशस्त्र सीमा बल (मरणोपरांत)**

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 23 अप्रैल, 2009)

23 अप्रैल, 2009 को श्री भोपाल सिंह वारंगदिशा एन सी हिल्स (असम) में तैनात, 9 अन्य सशस्त्र सीमा बल के कार्मिकों के साथ "कलाचन्द" की ओर जा रहे थे जहां 17 वीं बटालियन की टुकड़ी संचार उपकरणों और अन्य सामग्री को एकत्रित करने के लिए रूकी हुई थी। वारंगदिशा पर वापस आते समय, घात लगाकर एक हमला हुआ और माहवांग के पास सड़क के दोनो ओर से विद्रोहियों द्वारा की जा रही भारी गोलीबारी की चपेट में आ गए। अपनी जान को खतरे में पाकर श्री सिंह ने तुरंत कार्रवाई की। वे गाड़ी से गोलीबारी करने लगे और घात हमले का जवाब देने के लिए कूद पड़े। विद्रोहियों पर लगातार गोलीबारी करने वाली टुकड़ी का नेतृत्व वही कर रहे थे और उन्होंने हमले को सफलतापूर्वक नाकाम कर दिया। विद्रोहियों को घटना स्थल से भागने के लिए मजबूर होना पड़ा।

इस आपरेशन के दौरान श्री भोपाल सिंह को उनके सिर में चोट लगी और वे मौके पर ही वीरगति को प्राप्त हो गए। उन्होंने न केवल अपने मातहत सिपाहियों की जान बचाई बल्कि भारी मात्रा में हथियार, गोलाबारूद और सरकारी भंडार भी नुकसान होने से बचाया।

श्री भोपाल सिंह ने विद्रोहियों से लड़ते हुए अद्वितीय साहस और हिम्मत का प्रदर्शन किया और अपने जान की कुर्बानी दी।

4. **आई सी-61390 मेजर सुरेश सुरी, कुमाऊं रेजिमेंट/ 13 राष्ट्रीय राइफल्स (मरणोंपरांत)**

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 22 सितंबर, 2009)

मेजर सुरेश सुरी द्वारा प्राप्त विशेष खुफिया सूचना के आधार पर जम्मू एवं कश्मीर के एक गांव में संदेहास्पद घर के ऊपर दिनांक 22 सितंबर, 2009 को 1430 बजे घेरा डाला गया।

मेजर सुरेश सुरी अंदरूनी घेरे का हिस्सा थे। तीन अन्य साथियों के साथ वे छुपे आतंकवादियों का पता लगाने के लिए घर के अंदर घुसे। घर की दूसरी मंजिल पर अफसर को छत के ऊपर लकड़ी के कुछ संदेहास्पद खुले टुकड़े मिले जहां छिपे होने की आशा थी । अफसर ने अपने साथी के साथ पूरी छत को छान मारा। तभी वे आतंकवादियों की ओर से होने वाली भारी गोलीबारी की चपेट में आ गए और गंभीर रूप से घायल हो गए। घायल होने के बावजूद भी अफसर ने अपनी एके-47 राइफल की गोलीबारी से जवाबी कार्रवाई की और एक हथगोला भी फैंक दिया। इस प्रकार एक आतंकवादी मारा गया और दूसरा गंभीर रूप से घायल हो गया। दूसरा आतंकवादी छिपे जगह की आड़ में होकर अंधाधुंध गोलीबारी करने लगा और खोजी दल के अन्य सैनिकों को चोट पहुंचा दिया। अफसर घायल साथियों को सुरक्षित स्थान पर ले गया लेकिन इससे पहले अपनी चोट के कारण वह बच न सका।

मेजर सुरेश सुरी ने आतंकवादियों के खिलाफ आपरेशन में उत्कृष्ट वीरता, सखा भाव व अद्वितीय नेतृत्व का प्रदर्शन किया और आतंकवादियों से लड़ते हुए आत्म बलिदान किया।

5. **सुश्री रुखसाना कोसर, शाहादारा शरीफ (मोरहा कल्सी) तहसील-थानामंडी, जिला - राजौरी, जम्मू एवं कश्मीर**

एवं

6. **श्री एजाज अहमद, शाहादारा शरीफ (मोरहा कल्सी) तहसील-थानामंडी, जिला - राजौरी, जम्मू एवं कश्मीर**

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 27 सितंबर, 2009)

27 सितंबर, 2009 को लगभग 2130 बजे लश्करै तैयबा, के तीन खुंखार आतंकवादियों ने जम्मू-कश्मीर, जिला-राजौरी शाहादारा शरीफ के निवासी श्री नूर अहमद के घर पर जबरदस्त धावा बोला और उसके तथा उसके परिवार के लोगों की निर्दयतापूर्वक पिटाई करने लगे। उसकी पुत्री रुखसाना कोसर तथा बेटा श्री एजाज अहमद जो बगल के कमरे में सो रहे थे, घर से बाहर निकले और देखा कि उनके माता-पिता को बेरहमी से पीटा जा रहा है। एक आतंकवादी ने श्री नूर अहमद के भाई पर गोली चला दी और उसे घायल कर दिया। अपने परिवार के सदस्यों की जान को खतरे में भांपकर सुश्री रुखसाना कोसर और श्री एजाज अहमद ने कमरे में पड़ी हुई कुल्हाड़ी/लाठियों को उठा लिया और उग्रवादियों पर हमला बोल दिया। एक उग्रवादी भाग निकला। हिम्मत दिखाते हुए दोनों भाई-बहन ने

मिलकर एक उग्रवादी के हाथ से हथियार छीन लिए और उसे मौके पर ही मार गिराया। उसके बाद वे अपने घरवालों को सुरक्षित स्थान पर ले गए। दूसरा आतंकवादी जो घायल हो गया था अंधेरे में भाग निकलने में सफल रहा। बाद में पता चला कि उनके द्वारा मारा गया आतंकवादी लश्कर-ए तैयबा का डिवीजनल कमांडर था जो निर्दोष नागरिकों की हत्या तथा सुरक्षा बलों पर अनेक बार हमला करने की घटनाओं में शामिल था।

सुश्री रुखसाना कोसर और श्री एजाज अहमद ने खुंखार तथा हथियारों से लैस उग्रवादियों के विरूद्ध लड़ने में अद्वितीय साहस और सूझबूझ का परिचय दिया।

(बरूण मित्रा)
संयुक्त सचिव

संख्या 53-प्रेज/2010-राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को उनकी बहादुरी के लिए **"शौर्य चक्र"** से सम्मानित करने की स्वीकृति प्रदान करती हैं :-

1. **श्री संजय भाउराव शिंदे, लक्ष्मी नारायण नगर,**
पुसड जिला यावतमाल, महाराष्ट्र (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 17 मार्च, 2008)

17 मार्च, 2008 को 58 वर्षीय श्री मानिक राव रामभाए सदावर्त जो यावतमाल जिले के डाकघर पुसड में रोकेड़िया ने भारतीय स्टेट बैंक से 3 लाख रुपये की राशि निकाली और एक आटो रिक्शा हायर किया। तभी अचानक दो अज्ञात व्यक्ति आ पहुंचे और उन पर एक धारीदार हथियार से हमला कर दिए तथा नकद राशि को लूटने की कोशिश की। घटना की गंभीरता को देखते हुए आटो रिक्शा के चालक श्री संजय भाउराव शिंदे उनमें से एक को पकड़ लिया। ज्योंही श्री शिंदें ने उन्हें लूटने से रोका लुटेरों ने उन्हें बेदर्दी से हथियार भोंक दिया। श्री शिंदें को अनेक चोटें आई किंतु उन्होंने साहस नहीं छोड़ा और हमलावरों को पकड़े रहे औरे जोर-जोर से चिल्लाने लगे । इसकी वजह से लोगो की भीड़ वहां इकठ्ठी हो गई और अपराधी रुपयों को लूट न सके। तथापि, वे भागने में सफल रहे। इस प्रक्रिया में श्री शिंदे अपनी चोटों के शिकार बन गए।

श्री संजय भाउराव शिंदे के इस वीरतापूर्ण कारनामें से डाकघर के रोकड़िया की जान बच गई और सरकारी धन लूटने से बच गया। हमलावरों से लड़ते हुए उन्होंने सर्वोच्च बलिदान दिया।

2. **जी एस-171792-के आपरेटर एक्सकेवेटिंग मशीनरी**
प्रीतम चन्द, सीमा सड़क संगठन (मरणोपरांत)

एवं

3. **जी एस-173772-पी चालक मैकेनिकल ट्रांसपोर्ट ग्रेड-।।**
प्यार चंद, सीमा सड़क संगठन (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 12 जनवरी, 2009)

आपरेटर एक्स केवेटिंग मशीनरी प्रीतम चंद और चालक मैकेनिकल ट्रांसपोर्ट ग्रेड-।। प्यार चंद असम के धेमजी जिले के अकाजन-जोनाई मार्ग पर 465.00 किमी. की दूरी पर काम कर रहे थे जो घुसपैठी गतिविधियों से बुरी तरह प्रभावित है।

12 जनवरी, 2009 को 2100 बजे तीन अज्ञात घुसपैठी कैंप जो कि डब्ल्यु एम एम सयंत्र के पास स्थित था के एक बैरक में घुस आए और बैरक के दरवाजों को जोर लगाकर तोड़ने लगे। सभी तीन घुसपैठी उच्चकोटि के हथियारों से लैस थे, और मजदूरों के भुगतान के लिए लाए गए नकद धनराशि तथा प्रबंधक के बारे में पूछने लगे। जी आर ई एफ में से एक कार्मिक जो दरवाजे के पास ही सो रहा था ने उनके पूछताछ का नकारात्मक जवाब दिया। तभी तुरंत एक घुसपैठी ने उनके माथे पर बंदूक की बट मार दी जिससे जी आई एफ एक कार्मिक मूर्छित हो गया।

अपने साथियों पर हमला होते देख, प्यार चंद और आपरेटर एक्स केवेटिंग मशीनरी प्रीतम चंद फौरन चिल्ला पड़े और अंजाम सोचे बिना ही बड़ी बहादुरी दिखाते हुए घुसपैठियों को काबू में करने तथा उन्हें पकड़ने के लिए उन पर कूद पड़े। इसी बीच एक घुसपैठी ने चालक एम टी प्यार चंद और ओ इ एम प्रीतम चंद पर अंधाधुंध गोली चला दी । दोनों को गोलियों से चोटें आई। हालांकि प्यार चंद तुरंत बिस्तर पर गिर गए, प्रीतम चंद गोलियों की चोट के बावजूद भी धराशायी होने से पहले तक घुसपैठियों का पीछा करते रहे। उनके द्वारा दिखाए गए साहस से घुसपैठी कैंप छोड़ने तथा वहां से भागने के लिए मजबूर हो गए। ओ इ एम प्रीतम चंद और चालक एम टी प्यार चंद की इस बहादुरी से सरकारी धन नुकसान होने से बच गया तथा कैंप के भीतर सो रहे अन्य साथियों की अनमोल जानें बच गई।

आपरेटर एक्स केवेटिंग मशीनरी प्रीतम चंद और चालक मैकेनिकल ट्रांसपोर्ट ग्रेड-।। प्यार चंद ने अद्वितीय साहस का प्रदर्शन किया और विद्रोहियों से लड़ते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया।

4. आई सी-70145 लेफ्टिनेंट सतबीर सिंह, सेना मेडल, सेना शिक्षा कोर/12 मराठा लाइट इन्फैन्ट्री (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 18 मार्च, 2009)

18 मार्च, 2009 को 2045 बजे लेफ्टिनेंट सतबीर सिंह ने गश्त के दौरान मणिपुर के पश्चिमी इम्फाल जिले में एक मोबाइल चेक पोस्ट का पता लगाया।

लेफ्टिनेंट सतबीर सिंह गश्त दल के कमांडर थे। इस दल के सिपाही को यह सिग्नल दिया गया कि वे गाड़ियों को रोकें। एक जीप को रोकने के प्रयास में सिपाही के ऊपर गाड़ी से आतंकवादियों ने गोलीबारी शुरू कर दी। उनकी दाई जांघ में गोली से चोट लगी और वह सड़क पर गिर गए। लेफ्टिनेंट सतबीर सिंह ने गाड़ी पर गोली चलाई और घायल साथी को सुरक्षा घेरे में ले लिया। इस दौरान उनके बांए कंधे और बगल में गोली लगी परंतु उन्होंने जाने से मना कर दिया और खोजी दल को उन्हें सुरक्षा देने का आदेश दिया तथा आंतकवादियों पर तब तक गोली चलाते रहे जब तक वह बेहोश होकर गिर न पड़े। अगले दिन खोज के दौरान ए के 47 राइफल के साथ एक मारे गए आंतकवादी का शव बरामद हुआ।

लेफ्टिनेंट सतबीर सिंह ने उत्कृष्ट वीरता, दृढ़ निश्चय और सखाभाव का परिचय दिया। अपने घायल साथी को बचाने के लिए लेफ्टिनेंट सतबीर सिंह ने एक हथियार बंद आतंकवादी को मार गिराया और सेना की सर्वोच्च परंपरा के अनुसार अपनी जान न्यौछावर कर दी।

5. **जेसी-520623 नायब सूबेदार निर्मल सिंह, सेना मेडल, डोगरा रेजिमेंट/11 राष्ट्रीय राइफल्स**

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 02 अप्रैल, 2009)

नायब सूबेदार निर्मल सिंह 2 अप्रैल, 2009 को जम्मू एवं कश्मीर के किश्तवार जिले के एक गांव में किए गए उस आपरेशन में शामिल थे।

यह जे सी ओ उस सैन्य टुकड़ी का ही हिस्सा था जिसने गांव में एक संदेहास्पद घर पर 02 अप्रैल, 2009 को 1100 बजे घेरा डाला था। जे सी ओ ने स्वयं नजदीक से घेरे का बंदोबस्त किया और स्वयं को निशाने वाले घर के सबसे समीप तैनात किया। 02 अप्रैल, 2009 को 1715 बजे एक आतंकवादी साथियों से जबरदस्त सुरक्षा के भीतर जे सी ओ पर पर ग्रेनेड फैंकते हुए भाग निकलने का प्रयास किया। उत्कृष्ट बहादुरी दिखाते हुए जे सी ओ ने बिल्कुल करीब से उसे गोली मार दी। दूसरा आतंकवादी स्टाप की ओर अंधाधुंध गोलीबारी करने लगा। अपनी टुकड़ी को खतरे में फंसा भापंकर जे सी ओ अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना अचूक निशाने से जानलेवा प्रतिघात किया और मात्र 25 गज की दूरी पर आंतकवादी को विफल कर दिया। बाद मे इस आतंकवादी की शिनाख्त गैर कानूनी आतंकवादी सरगना के तहसील कमांडर के रूप में हुई।

नायब सूबेदार निर्मल सिंह ने भारी आतंकवादी गोलीबारी में आपरेशन के दौरान अद्वितीय साहस और उत्कृष्ट वीरता का प्रदर्शन किया।

6. **एस एस-39651मेजर अजय सिंह, 11 वीं बटालियन मराठा लाइट इन्फैन्ट्री**

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 06 अप्रैल, 2009)

06 अप्रैल, 2009 को करीब 1300 बजे मेजर अजय सिंह असम के कोकराझार जिले के एक गांव में आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में पुख्ता खुफिया सूचना के आधार पर खोजी दल के साथ डाले जाने वाले घेरे का नेतृत्व कर रहे थे।

परिस्थिति की गंभीरता को महसूस करते हुए मेजर अजय सिंह ने बिना समय गवाएं अपनी सैन्य टुकड़ी को हरकत में ले लिया और पांच अलग-अलग दिशाओं से गांव को घेर लिया। इस प्रकार आतंवादियों के भाग निकलने के सारे मौकों को रोक दिया। काफी पास में सेना की आवाजाही को देखकर आतंकवादी घबरा गए और गोलीबारी करते हुए घेरे को तोड़ने की कोशिश करने लगे और नजदीक के बांस की झुरमुटों में घुस गए। मेजर अजय सिंह ने झुरमुट को तुरंत चारो ओर से घेर लेने का आदेश दिया और स्वयं गोलीबारी का जवाब देते रहे और आतंकवादियों के पास तक बढ़ते गए। अंधेरा देखकर वह गोलीबारी की चपेट में आए बिना ही झुरमुट में गोलीबारी करने लगे और अत्यधिक साहसपूर्ण ढंग से अकेले ही काफी करीब से आंतकवादी का सफाया कर दिया। आतंकवादी के सफाए से एक बड़ा हादसा टल गया जो उनके विस्फोटक उपकरण को न लगाने से हो गया होता। आतंकवादी

के पास से बल्गेरिया में बना एक पिस्तौल,गोलाबारूद, 1 किग्रा. विस्फोटक सामग्री, डेटोनेटर और अन्य फुटकर विस्फोटक सामग्री बरामद किया गया।

मेजर अजय सिंह ने प्रतिकूल परिस्थिति में उत्कृष्ट बहादुरी, धैर्य और व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना अद्वितीय साहस का प्रदर्शन किया।

7. आई सी-64074 मेजर शिशिर जुनेजा, आर्मड कोर/8 राष्ट्रीय राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 18 अप्रैल, 2009)

आतंकवादियों के मौजूद होने के बारे में पुख्ता सूचना के आधार पर मेजर शिशिर जुनेजा ने 17-18 अप्रैल, 2009 की रात में जम्मू एवं कश्मीर के डोडा जिले के एक गांव के चारों और घेरा डाला। करीब 900 बजे जब उनकी सैन्य टुकड़ी घर-घर तलाशी ले रही थी तभी एक बंद घर के अंदर से भारी गोलाबारी होने लगी। जबरदस्त युक्ति कौशल का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने भागने के सभी रास्तों को कवर करते हुए अपनी टुकड़ी को तुरंत पुनर्गठित किया।

आतंकवादियों को खदेड़ने के लिए बुद्धिमता और प्रत्यभिज्ञान का परिचय देते हुए उन्होंने घुआं वाले गोले फैंककर उन्हें घेर लिया और गीले घासफूंस की एक ढेर में आग लगा दी जिससे और भी गोलाबारी होने लगी। एक आतंकवादी खिड़की से बाहर की ओर कूद गया और घेरेबंदी को तोड़ने के लिए गोलाबारी करने लगा। गुथ्मगुथ्था की लड़ाई में उसे मार गिरा कर दृढ़ निश्चय का परिचय देते हुए मेजर जुनेजा ने बदले में गोलीबारी की। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए, वह खिड़की से तेजी से घर के भीतर घुस गए और एक ग्रेनेड फैंक दिया और दूसरे आतंकवादी पर गोलीबारी करने लगे उसे भी गुथ्मगुथ्था की लड़ाई में मार गिराया।

मेजर शिशिर जुनेजा ने भारी गोलाबारी के जवाब में कर्तव्यपरायणता, दृढ निश्चय व उत्कृष्ट साहस दिखाते हुए उच्च कोटि की वीरता और नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

8. 9103039 राइफलमैन सुरज प्रकाश, जम्मू एवं कश्मीर लाइट इन्फैन्ट्री/10 राष्ट्रीय राइफल्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 19 अप्रैल, 2009)

राइफल मैन सुरज प्रकाश बटालियन घातक दल के सदस्य थे। 19 अप्रैल, 2009 को जम्मू कश्मीर के डोडा जिले के सामान्य क्षेत्र में खुंखार आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में सूचना मिलने पर उनका सफाया करने के लिए बटालियन घातक दल को भेजा गया।

खोज कार्य के दौरान राइफल मैन सुरज प्रकाश बिना सुरक्षा कवच के ही घर में जबरदस्ती घुसने के लिए स्वयं ही आगे आए। लक्षित घर पर युक्तिपूर्ण ढंग से पहुंच बनाते समय राइफलमैन सुरज प्रकाश

घर की ओर से होने वाली अचूक गोलीबारी की चपेट में आए गए। यद्यपि उन्हें गंभीर चोटें लगीं, दीवार की आड लेकर उन्होंने आगे की ओर गोलीबारी शुरू कर दी। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए और अदम्य साहस का परिचय देते हुए वे खुले दरवाजे की ओर रेंगकर गए और एक ग्रेनेड डाल दिया। फिर अंदर की ओर दौड़े और एक महिला आतंकवादी को मार गिराया। दूसरे आतंवादी ने आड ले ली और सैनिक के ऊपर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। राइफलमैन सुरज प्रकाश अपनी गंभीर चोटों से विचलित हुए बिना बड़ी तेजी से आतंकवादी पर झपटे और गुत्थगुत्था की लड़ाई में उसे मार गिराया। गुत्थमगुत्था की लड़ाई में दो दुर्दांत आतंकवादियों का सफाया करने के दौरान उन्हें घातक चोटे आई।

राइफल मैन सुरज प्रकाश ने अद्वितीय बहादुरी, सूझबूझ, दृढ़ निश्चय का परिचय देते हुए और सर्वोच्च बलिदान दिया।

9. आई सी-63920 मेजर दिपांकर दे, 39 असम राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 03 मई, 2009)

मणिपुर के इम्फाल पश्चिमी में एक गांव में हथियारबंद आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में पुख्ता खुफिया खबर प्राप्त होने पर मेजर दिपांकर दे ने 03 मई, 2009 को 2130 बजे एक आपरेशन शुरू किया।

गांव पहुंचने के दौरान मेजर दिपांकर दे ने जंगल की तरफ तीन-चार संदिग्ध व्यक्तियों की आवाजाही देखी। उन्हें चुनौती देने पर वे लोग सैन्य दल के ऊपर स्वचालित हथियारों से अंधाधुंध फायरिंग करते हुए जंगल की ओर भागने लगे। मेजर दिपांकर दे ने तुरंत अपनी टुकड़ी को युक्तिपूर्ण ढंग से तैनात कर दिया, गोलीबारी करने लगे और आतंकवादियों को घेर लिया। लगभग पचास मिनट तक चली गोलीबारी में आतंकवादी मेजर दिपांकर की ओर हथगोले फैंकने लगे ताकि उनके संपर्क को तोड़ा जा सके।

इसका मुहतोड़ जवाब देने के लिए मेजर दिपांकर ने तेजी से एक छोटी टुकड़ी का गठन किया और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना, भारी स्वचालित गोलीबारी के बीच छिपे हुए आतंकवादियों के पास पहुंच गए और उनपर हथगोले फैंक दिए और तुरंत 2" के मोर्टार से आगे लगाने के लिए आदेश दिया जिसके परिणामस्वरूप उन्हें भगाया जा सका और उनकी पोजीशन को छिनभिन्न किया जा सका। अद्वितीय साहस और उत्कृष्ट बहादुरी का परिचय देते हुए मेजर दिपांकर ने आतंकवादियों का पीछा किया और करीब जाकर अचूक निशाने से दो आतंकवादियों को अकेले ही मार गिराया जबकि अन्य आतंकवादी भाग निकलने में सफल रहे।

मेजर दिपांकर दे ने भारी गोलाबारी के बीच लड़ते हुए अद्वितीय नेतृत्व, दृढ़ निश्चय और उत्कृष्ट साहस का प्रदर्शन किया और दो दुर्दांत आतंकवादियों का सफाया कर दिया।

10. आई सी-61038 मेजर हरमीत सिंह समरा, राजपूत रेजिमेंट/10 राष्ट्रीय राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 08 मई, 2009)

08 मई, 2009 को दो आतंकवादियों के बारे में विशेष सूचना के आधार पर, मेजर हरमीत सिंह समरा ने जम्मू एवं कश्मीर के डोडा जिले के एक संदेहास्पद घर के ऊपर सख्त घेरा डाला। उन्होंने सभी नागरिकों को सुरक्षित बाहर निकाल दिया और उसके बाद घर की गहन छानबीन शुरू की। इस प्रकार, एक लकड़ी की अलमारी के अंदर बड़ी चालाकी से छिपे होने की जगह का पता लगाया। संपर्क साधने की कोशिश में उन पर आतंकवादियों की ओर से भारी गोलीबारी होने लगी जिसके फलस्वरूप उनके साथी के सिर पर चोट लग गई। अपुनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना वह दौड़े और भारी गोलीबारी के बावजूद भी अपने साथी को बाहर खींच लाए। खुंखार स्वयंभू डिवीजनल कमांडर ने हथगोले फैंके और अफसर के ऊपर गोलीबारी करने लगे। अपनी फौलादी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए अफसर ने बदले में कार्रवाई की और दृढ़ निश्चय एवं साहस का प्रदर्शन करते हुए गुत्थम-गुत्था की लड़ाई में उस खुंखार आतंकवादी को मार गिराया। अदम्य साहस दिखाते हुए अफसर ने ग्रेनेड (हथगोला) फैंकने के बाद घर के अंदर प्रवेश किया और दूसरे आंतकवादी पर गोलीबारी करने लगा और इस प्रकार उसे गुत्थम-गुत्था की लड़ाई में मार गिराया।

मेजर हरमीत सिंह समरा ने भारी गोलीबारी के दौरान उत्कृष्ट नेतृत्व, साहस, बुद्धिमता, धैर्य और अदम्य साहस का प्रदर्शन किया।

11. जी/114735 हवलदार थंगजालेट, 11 असम राइफल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 12 मई, 2009)

मणिपुर के तामेंगलांग के सामान्य क्षेत्र में उग्रवादियों की गतिविधियो के बारे में पुख्ता सूचना के आधार पर गांव के लोगों की हिम्मत बढ़ाने के लिए दो संक्रियात्मक टुकड़ियों को भेजा गया। हवलदार थंगजालेट नायब सूबेदार मोहन के नेतृत्व वाली संक्रियात्मक टुकड़ी के सदस्य थे।

12 मई, 2009 को लगभग 2000 बजे जब नेतृत्व वाली टुकड़ी गांव के पास पहुंचने वाली थी तभी यह उग्रवादियों की छिटपुट गोलीबारी की चपेट में आ गई। नायब सूबेदार के नेतृत्व वाली दूसरी टुकड़ी को अधिक ऊंचाई वाली जगह पर लगाया गया और अंदर से हो रही फायरिंग का ध्यान इस टुकड़ी की तरफ बंटा दिया गया। हवलदार थंगजालेट, जो हल्की मशीनगन चला रहे थे ने अंधेरे में जाकर एक मोटे पेड की आड ले ली जाहां से वे उग्रवादियों को गोलीबारी में उलझाए रहे।

13 मई, 2009 को लगभग 1030 बजे हवलदार थंगजालेट ने देखा कि कुछ जमीन में छिपे लोग खोंगबंग पहाड़ी की ओर जा रहे हैं। उग्रवादियों ने तुरंत भारी गोलीबारी के साथ जवाबी कार्रवाई की जिससे हवलदार थंगजालेट को बंदूक की अनेक गोलियों से चोटें आई। वह अपने हथियार से गोली

चलाते रहे जब तक कि स्वयं अत्यधिक खून बहने के कारण बेहोश होकर गिर न गए। बाद में सुरक्षित स्थान पर ले जाए जाने के दौरान वे अपनी चोटों के कारण बच न सके।

हवलदार थंगजालेट ने आतंकवादियों से लड़ते हुए उत्कृष्ट वीरता, अदम्य साहस और दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया और अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

12. एस एस - 41214 मेजर जगमाल सिंह वाघेला, 11 वीं बटालियन जाट रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 22 मई, 2009)

आतंकवादियों द्वारा सामूहिक रूप से घुसपैठ करने की कोशिश के बारे में पुख्ता खबर के आधार पर जम्मू कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के सामान्य क्षेत्र में एक आपरेशन शुरू किया गया।

22 मई, 2009 को मेजर जगमाल सिंह वाघेला उस दल की नुमाइंदगी कर रहे थे जिसने तीन सशस्त्र विदेशी आतंकवादियों द्वारा घुसपैठ करने की कोशिश को नाकाम कर दिया था। हरे-भरे भूक्षेत्र में भारी संख्या में हथियारों से लैस तीन आतंकवादियों को देखकर अफसर ने सूझबूझ से काम लिया और उन्हें 30 मीटर दूर तक ले गया जिस जगह पर उन्हें मारा जा सका। धैर्य एवं साहस दिखाते हुए अफसर आश्चर्यजनक रूप से पहले निशाने में ही एक आतंकवादी को मार गिराया जिसके बाद भारी गोलीबारी होने लगी । भागकर दो आतंकवादियों ने घने पेडों के पीछे आड ली और अंधाधुंध गोलीबारी करते रहे । बिना डरे तथा अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना अफसर ने भारी गोलीबारी के बीच घुटने के बल रेंगकर गया ताकि नियंत्रण रेखा की ओर आतंकवादियों के भागने के रास्ते को बंद किया जा सके । उन्हें घेरने के बाद मौके का फायदा उठाकर उसने आतंकवादियों के ऊपर हथगोले फैंके जिसके परिणामस्वरूप आमने-सामने की लड़ाई में दूसरे आतंकवादियों का सफाया किया जा सका।

मेजर जगमाल सिंह वाघेला ने विषम परिस्थितियों में उत्कृष्ट वीरता, अनुकरणीय साहस और नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

13. आई सी-64088 कैप्टन पौरूष प्रधान, कुमांऊ रेजिमेंट/26 राष्ट्रीय राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 05 जून, 2009)

कैप्टन पौरूष प्रधान जम्मू-कश्मीर के डोडा जिला में तीन कट्टर आतंकवादियों की गतिविधियों का पीछा कर रहे थे। 05 जून, 2009 को अफसर ने छिपने के ठिकाने तक एक दस्ते का नेतृत्व किया। पहुंचने पर अफसर ने छिपने के ठिकाने को नए तरीके से घेर लिया जिससे बच निकलने के सभी संभावित रास्ते कट गए। तदनंतर, प्रातः होने पर उन्होंने घेरे को पुनः स्थापित किया।

बेखबर होकर आतंकवादी बाहर आए। सुरक्षा बलों को देखकर, आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी कर दी। स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए तथा आतंकवादी की गोलीबारी के सामने आकर

इस अफसर ने हथगोला फैंककर आतंकवादी को मार गिराया। इसके बाद एक अन्य आतंकवादी इस अफसर की तरफ अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए आया। कैप्टन प्रधान तुरंत खुले में आए तथा बिल्कुल नजदीक से आतंकवादी को मार गिराया।

कैप्टन पौरूष प्रधान ने असाधारण बहादुरी, अनुकरणीय नेतृत्व, कर्तव्यपरायणता तथा अदम्य साहस का प्रदर्शन किया।

14. आई सी-59470 मेजर मनोज अरूपारायिल पोथन, सेना मेडल, 4 बटालियन सिख लाइट इंफैंट्री

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 07 जून, 2009)

सामान्य क्षेत्र निज डेफली में आतंकवादियों की आवाजाही के संबंध में प्राप्त सूचना के आधार पर 07 जून, 2009 को मेजर मनोज अरूपारायिल पोथन असम के जिला बक्सा में सामान्य क्षेत्र में आतंकवादियों के बच निकलने के संभावित रास्तों पर लगाई गई एम्बुश पार्टियों में से एक के कमांडर थे। लगभग 2330 बजे एम्बुश पार्टी और अफसर आतंकवादी क्षेत्र के निकट गए, दो व्यक्तियों को संदिग्ध हरकत करते देखा गया। ललकारे जाने पर, व्यक्तियों ने भागने का प्रयास किया तथा आखों से औझल हो जाने के लिए एम्बुश पार्टी पर गोलीबारी कर दी।

मेजर मनोज अरूपारायिल पोथन ने अनुकरणीय सूझबूझ का परिचय देते हुए अपनी पार्टी को तुरंत सावधान कर दिया। यह महसूस करते हुए कि वे फंस गए हैं आतंकवादियों ने ओझल हो जाने के लिए गोलीबारी की तथा हथगोले फैंके। भाग रहे आतंकवादियों का पीछा करने के लिए अफसर ने अपनी पार्टी को रणनीतिक ढंग से लगाया। व्यक्तिगत सुरक्षा से बिल्कुल बेपरवाह उच्च दर्जे के साहस का प्रदर्शन करते हुए अफसर ने पीछा करके दो आतंकवादियों को मार गिराया। आतंकवादियों से हथियारों तथा गोलाबारूंद का एक बड़ा जखीरा बरामद किया।

मेजर मनोज अरूपारायिल पोथन ने आतंकवादियों के विरूद्ध लड़ाई में अदम्य साहस और बहादुरी का प्रदर्शन किया।

15. 4478544 लांस नायक दविन्द्र सिंह, 4 बटालियन सिख लाइट इंफैंट्री

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 14 जून, 2009)

असम के बक्सा जिले के सामान्य क्षेत्र में हथियारों तथा गोलाबारूद से लैस आतंकवादियों की आवाजाही के बारे में विशिष्ट सूचना के आधार पर एक घेराबंदी तथा तलाशी आपेरशन शरू किया गया था। 13 जून, 2009 को 2330 बजे आने-जाने के सभी रास्तों पर रोक लगाए गए थे।

14 जून, 2009 को लगभग 1100 हमारे अपने स्रोत ने दक्षिण-झरगांव के बाह्य क्षेत्रों के एक बांस की बनी में आतंकवादियों के उपस्थित होने की सूचना की पुष्टि की। कैप्टन अनमोल भार्गव और

उनकी पार्टी ने रणीनीतिक ढंग से आगे बढ़ी तथा बांस की बनी को घेरना शुरू कर दिया। सेना को देखकर आतंकवादी ने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी तथा घेराबंदी को तोड़ने की कोशिश की। लांस नायक दविन्द्र सिंह ने अनुकरणीय साहस और सूझबूझ का प्रदर्शन करते हुए कैप्टन अनमोल भार्गव द्वारा उपलब्ध करायी गई गोलीबारी की आड़ का फायदा उठाकर अपने आप को पुन: तैनात किया तथा अचूक गोलीबारी से दो आतंकवादियों को गिरा दिया। बेअसर गोलीबारी की बात को समझकर शेष आतंकवादियों ने भागने की कोशिश की। उच्च दर्जे की बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए लांस नायक दविन्द्र सिंह ने भागते आतंकवादी का पीछा किया तथा अचूक गोली से एक और आतंकवादी को ठंडा कर दिया। आतंकवादियों से हथियारों और गोलाबारूद का बड़ा जखीरा बरामद किया गया।

लांस नायक दविन्द्र सिंह ने आतंकवादियों का पीछा करने तथा उन्हें निष्क्रिय करने में असाधारण वीरता के अनुकरणीय कार्य का प्रदर्शन किया।

16. आई सी-63580 कैप्टन मुदस्सर इकबाल, 2 बटालियन, बिहार रजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 17 जून, 2009)

कैप्टन मुदस्सर इकबाल ने असम-अरूणाचल प्रदेश सीमा पर धेमाजी जिले में निर्दोष लोगों, पुलिस कार्मिकों को मारने, तोड-फोड़ करने तथा धन ऐंठने के कार्य में संलिप्त एक भयानक आतंकवादी संगठन के कट्टर आतंकवादियों के बारे में तीन माह तक व्यवस्थित रूप से तथा अथकता से विकसित आसूचना नेटवर्क का विकास किया।

16 जून, 2009 को असम के धेमाजी जिले के एक गांव में दो सशस्त्र काडर के साथ आतंकवादी के उपस्थित होने की विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई थी। कैप्टन मुदस्सर इकबाल ने एक कुशल आपरेशन की योजना बनाई तथा आधी रात को घने जंगल से लक्षित क्षेत्र पर पहुंचे। ज्योंही, आक्रमण दल संदिग्ध घर पर पहुंचा, आतंकवादियों ने नजदीक से गोलीबारी कर दी। अडिगता के साथ फौलादी इरादे तथा अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए इस अफसर ने जवाबी गोलीबारी की तथा गोलियों की बौछार के बीच आगे बढ़े तथा अकेले ही भयानक आतंकवादी को मार गिराया जो एके 56 के साथ अफसर से उलझा हुआ था।

इसी बीच दूसरी पार्टी ने दूसरी तरफ से अफसर को घेर लिया। फंस जाने पर, एक आतंकवादी आंखों से औझल हो गया तथा अंधेरी की आड़ का फायदा उठाकर भागने लगा। व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह किए बिना अपने साथी के साथ कैप्टन मुदस्सर इकबाल ने अदम्य साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय देते हुए उसका 300 मीटर तक पीछा किया तथा भयंकर भीडंत में उसे गोली से उड़ा दिया।

कैप्टन मुदस्सर इकबाल ने कर्तव्यपरायणता से बढ़कर अदम्य वीरता का प्रदर्शन किया तथा अकेले ही दो आतंकवादियों का खात्मा कर दिया।

17. **आई सी-46936 लेफ्टिनेंट कर्नल संजय कौशिक, मद्रास रेजिमेंट/8 राष्ट्रीय राइफल्स**

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 01 जुलाई, 2009)

लेफ्टिनेंट कर्नल संजय कौशिक ने जम्मू-कश्मीर के डोडा जिला के एक गांव के एक घर में चार आतंकवादियों के उपस्थित होने की विश्वसनीय सूचना मिलने पर बटालियन घातक टुकड़ी का 01 जुलाई, 2009 को 1300 बजे आगे की कार्रवाई करते हुए नेतृत्व प्रदान किया। अफसर ने तुरंत घेरे की व्यवस्था करके तथा घनी झाड़ियों तथा तेज ढालों वाले जंगल में आतंकवादियों का पता लगाने के लिए दोहरी जांच का समन्वयन करके रणनीतिक कौशल का प्रदर्शन किया। पता लग जाने पर आतंकवादियों ने हमारी पार्टियों पर गोलीबारी कर दी तथा एक नाले के पास तितर-बितर हो गए जो कि बड़े शिलाखंडों तथा घनी झाड़ियो से ढ़का हुआ था। धुंधलका हो जाने की प्रत्याशा में यह अफसर भारी गोलीबारी में बगल से रेंगकर आगे बढ़े तथा दो हथगोले फैंके। निजी सुरक्षा की परवाह किए बिना वह निकट गए तथा बिल्कुल नजदीक से दो आतंकवादियों को मार गिराया जिससे तीसरे आतंकवादी को निष्क्रिय करने में सुविधा हो गई।

लेफ्टिनेंट कर्नल संजय कौशिक ने आतंकवादियों की गोलीबारी के समक्ष उच्च कोटि की दृढ़ता, अदम्य साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

18. **आई सी-63409 मेजर एन एन वेंकटा श्रीराम, मद्रास रेजिमेंट/8 राष्ट्रीय राईफल्स**

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 17 जुलाई, 2009)

17 जुलाई, 2009 को आतंकवादियों के उपस्थित होने की विश्वसनीय सूचना के आधार पर मेजर एन एन वेंकटा श्रीराम ने जम्मू-कश्मीर के डोडा जिला के एक गांव में संदिग्ध घरों के चारों तरफ रणनीतिक कौशल का परिचय देते हुए एक कारगर घेराबंदी डाली जिससे बच निकलने के सभी रास्ते बंद हो गए।

संदिग्ध घरों की तलाशी के दौरान, दल पर स्वचालित हथियारों से भारी गोलीबारी हो गई। आतंकवादियों को बाहर निकालने के लिए सूझबूझ तथा प्रवीणता का प्रदर्शन करते हुए मेजर श्रीराम अपने साथी के साथ घर के निकट आए तथा खिड़की में से हथगोले और जलते हुए बौरे फैंके। एक आतंकवादी ने खिड़की से उन पर गोली चलाई। इस अफसर ने फौलादी इरादे रखते हुए जवाबी गोलीबारी करके बिल्कुल निकट से उसे उड़ा दिया तत्पश्चात वह फुर्ती से खिड़की के रास्ते घर में घुसे तथा आतंकवादी संगठन के सेक्शन कमांडर पर टूट पड़े और बिल्कुल निकट से उसे मार गिराया।

मेजर एन एन वेंकटा श्रीराम ने शत्रु की भारी गोलीबारी के समक्ष अडिग कर्तव्यपरायणता, दृढ़ता, उच्च दर्जे के नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

19. आई सी-57255 मेजर कुमार अंकुर, सेना मेडल, 12 बटालियन, बिहार रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 27 जुलाई, 2009)

आतंकवादियों के एक समूह द्वारा घुसपैठ के एक प्रयास की विशिष्ट निगरानी सूचना के आधार पर जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिला के सामान्य क्षेत्र में एक आपरेशन शुरू किया गया।

27 जुलाई, 2009 को मेजर कुमार अंकुर ने दल का अनुकरणीय नेतृत्व किया जिसने तीन विदेशी सशस्त्र आतंकवादियों के घुसपैठ के प्रयास को विफल किया। अफसर ने पूरी तरह से हथियारों से लैस तीन आतंकवादियों को बुद्धिमता का प्रयोग करते हुए सामान्य क्षेत्र में मारक क्षेत्र की जद में आने दिया। साधना और धैर्य तथा संपूर्ण स्तब्धता का प्रदर्शन करते हुए इस अफसर ने प्रथम निशाने में ही एक आतंकवादी को मार गिराया। पूर्णत: अडिग रहते हुए तथा व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना नियंत्रण रेखा के पास बच निकलने के रास्तों को रोकने के लिए यह अफसर शत्रु की गोलीबारी के बीच रेंगकर आगे बढे। निकट आने पर उन्होंने एक ऊंचे स्थान से आतंकवादियों पर हथगोले फैंके जिसके परिणामस्वरूप एक अन्य आतंकवादी का सफाया हो गया।

मेजर कुमार अंकुर ने विकट परिस्थितियों में असाधारण वीरता तथा साहस और रणनीतिक कौशल तथा नेतृत्व योग्यताओं का प्रदर्शन किया।

20. आई सी-65220 मेजर जीवन बी,11 बटालियन, जाट रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 04 अगस्त, 2009)

यूनिट स्रोत से पक्की सूचना के आधार पर मेजर जीवन बी. ने योजना बनाई तथा जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिला में आतंकवादियों द्वारा घुसपैठ करने के रास्तों की पहचान करके मिशन-उन्मुखी दलों की विवेकपूर्ण तैनाती की।

आतंकवादियों का पता लगने पर 04 अगस्त, 2009 को 1930 बजे इस अफसर ने धैर्य धारण करते हुए बड़ी स्तब्धता बनाए रखी तथा एम्बुश का जाल बिछाया जिससे अचूक निशाने से एक आतंकवादी को मार गिराया गया। अंधेरा होने पर आतंकवादियों तथा हमारे सैनिकों के बीच रात भर रूक रूक कर गोलीबारी होती रही। सुबह होने पर मेजर जीवन बी. ने तलाशी शुरू की तथा उन पर प्रथम संपर्क में ही भारी आंतवादी गोलीबारी हो गई। अडिग रहते हुए संतुलन के साथ इस अफसर ने मुश्किल दौर में आड लेने के बाद जवाबी गोलीबारी की तथा एक आतंकवादी को मार गिराया। आगे की तलाशी के दौरान उन पर फिर से दूसरे आतंकवादी की तरफ से भारी गोलीबारी हो गई। अपने साथी अफसर द्वारा उपलब्ध करायी गई आड़ लेकर असाधारण तथा अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए शत्रु की गोलीबारी के बीच रेंगकर आगे बढ़े तथा बिल्कुल नजदीक से दूसरे आतंकवादी को मार गिराया।

मेजर जीवन बी ने आतंकवादियों के विरूद्ध लड़ाई में असाधारण वीरता तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

21. आई सी-63809 कैप्टन तुषार दश्माना, 6 बटालियन, पैराशूट रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 07 अगस्त, 2009)

एक आसूचना के आधार पर कैप्टन तुषार दश्माना ने जम्मू-कश्मीर के बांदीपुर जिला के सामान्य क्षेत्र में एक एम्बुश लगाया।

07 अगस्त, 2009 को 1830 बजे इस अफसर ने नाला के अंदर नजदीक ही आतंकवादियों की आवाजाही देखी। उन्होंने मूल्यांकन किया कि एम्बुश दलों को सचेत करने से आपरेशन खतरे में पड़ जाएगा इसलिए वह और उसके साथी लोग उस स्थान से हट गए तथा आतंकवादियों को हैरत में डाल दिया। आतंकवादियों ने तुरंत गोलीबारी की तथा भागने का प्रयास किया। अफसर ने फौलादी इरादे बनाए रखे और तुरंत गोलीबारी का जवाब देते हुए एक आतंकवादी को मार गिराया। शेष आतंकवादी नीचे झरने की तरफ भाग गए। जरूरत की गंभीरता को समझते हुए यह अफसर अपनी जगह से बाहर कूदे तथा भाग रहे आतंकवादियों का रास्ता काटने के लिए अपने साथी के साथ निडरता से आगे बढ़े। अत्यधिक शांत रहकर फौलादी इरादों के साथ वह आतंकवादियों के निकट आए तथा बिल्कुल नजदीक से दूसरे आतंकवादी को मार गिराया। उसी दौरान तीसरे आतंकवादी ने पीछे से अफसर पर निशाना साधा। बिजली सी कौंध के साथ इस अफसर ने आतंकवादी पर हथगोला फैंका तथा इसके बाद गोलियों की बौछार की जिसके फलस्वरूप उसका सफाया हो गया।

कैप्टन तुषार दश्माना ने आतंकवादियों के विरूद्ध लड़ाई में असाधारण बहादुरी तथा अदम्य साहस का प्रदर्शन किया।

22. आई सी-67238 कैप्टन लोकेश कुमार, 9 बटालियन पैराशूट रेजिमेंट (विशेष बल)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 10 अगस्त, 2009)

कैप्टन लोकेश कुमार को जम्मू-कश्मीर के रियासी जिला की पीर पंजाल की रेंजो में दूर-दराज के क्षेत्र में अनेक एम्बुश लगाने का कार्य सौंपा गया था।

10 अगस्त, 2009 को 0530 बजे कैप्टन लोकेश कुमार ने अप्रत्याशित रूप से एम्बुश स्थल से दूर जम्मू-कश्मीर के रियासी जिला की पीर पंजाल की रेजो में तीन आतंकवादियों की हरकत देखी। उच्च दर्जे की पहल शक्ति और आक्रमण का प्रदर्शन करते हुए अफसर ने अपने दस्ते को युक्तियुक्त बनाया और आतंकवादियों के निकट गए। कैप्टन लोकेश कुमार ने सही मौके पर अचूक गोलीबारी करके एक आतंकवादी को वहीं पर मार गिराया। शेष आतंकवादियों ने अचंभित होकर हमारे सैनिकों पर अंधाधुंध

गोलीबारी कर दी। अपने सैनिकों के प्रति खतरे को भांपकर कैप्टन लोकेश कुमार गोलीबारी के बीच ऊंचे स्थान पर पहुंच गए तथा दूसरे आतंकवादी को बिल्कुल नजदीक से मार गिराया।

कैप्टन लोकेश कुमार ने आतंकवादियों के विरूद्ध लड़ाई में सक्रिय नेतृत्व तथा असाधारण शौर्य का प्रदर्शन किया तथा सभी तीनों आतंकवादियों का सफाया कर दिया।

23. आई सी-60656 मेजर अनुज सिंह, बिग्रेड ऑफ दि गार्ड्स/59 राष्ट्रीय राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 14 अगस्त, 2009)

एक दीर्घकालिक नवीन तथा अचूक आसूचना योजना के आधार पर मेजर अनुज सिंह ने जम्मू-कश्मीर के रियासी जिला में कट्टर आतंकवादियों के विरूद्ध एक आपरेशन शुरू किया था। 14 अगस्त, 2009 को 1645 बजे संदिग्ध हरकत देखी तब मेजर अनुज सिंह ने ललकारा तो उन पर भारी गोलीबारी हो गई। उन्होंने तुरंत गोलीबारी का जवाब दिया तथा एक आतंकवादी को मार गिराया। शेष तीन आतंकवादियों ने कुछ चट्टानों के पीछे आड़ ले ली तथा हमारे सैनिकों पर गोलीबारी करने लगे। सैनिकों पर मंडराए खतरे को देखकर, मेजर अनुज सिंह रेंगकर आगे बढ़े तथा दूसरे आतंकवादी को मार गिराया। शेष दो आतंकवादियों का बाद में छोटे दल द्वारा सफाया कर दिया गया।

मेजर अनुज सिंह ने आतंकवादियों के विरूद्ध लड़ाई में व्यक्तिगत जीवन की बिल्कुल भी परवाह किए बिना असाधारण वीरता तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

24. आई सी-69343 कैप्टन अनूप पाण्डेय, 4 बटालियन राजपूत रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 22 अगस्त, 2009)

कैप्टन अनूप पाण्डेय सात अन्य रैंकों से युक्त एक छोठी त्वरित कार्रवाई टुकड़ी के लीडर थे। लगभग 13,000 फुट की ऊंचाई पर जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिला में नियंत्रण रेखा के पास घुसपैठ की संभावित कोशिश के बारे में सूचना मिलने पर उन्होंने संभावित भिड़ंत के लिए उन्होंने अपने समूह की शुरूआत की।

22 अगस्त, 2009 को 1910 बजे अंधेरे में आतंकवादियों की संदिग्ध गतिविधि को देखा गया। अत्यधिक संयम तथा रणनीतिक कौशल का इस्तेमाल करते हुए उन्होंने आतंकवादियों को एम्बुश के निकट आने दिया तथा इस कार्रवाई में एक को घायल कर दिया। घायल आतंकवादी ने आड़ लेकर हमारे सैनिकों पर गोलीबारी कर दी। अदम्य साहस, नेतृत्व तथा युद्धकला का प्रदर्शन करते हुए वह आतंकवादी पर भारी पड़े और उसका सफाया कर दिया।

अन्य आतंकवादी हताश था तथा आगे नहीं बढ़ने दे रहा था। स्थिति का आकलन करके और अपने समूह की गोलीबारी की आड़ लेते हुए कैप्टन अनूप पाण्डेय आतंकवादी के निकट गए तथा हथगोला फैंका और निकट युद्ध में उसका सफाया कर दिया।

कैप्टन अनूप पाण्डेय ने आंतकवादियों के विरूद्ध लड़ाई में स्वयं को जोखिम में डालकर वीरता तथा अदम्य साहस का प्रदर्शन किया।

25. आई सी-56413 मेजर आकाश सिंह, 5 वीं बटालियन, मराठा लाइट इंर्फैट्री (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 08 सितंबर, 2009)

जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिला के मेनधार सेक्टर के सामान्य क्षेत्र में घुसपैठ के प्रयास की सूचना मिलने पर 08 सितंबर, 2009 को मेजर आकाश सिंह ने 2210 बजे तक एम्बुश तुरंत लगाया। चतुर धैर्य का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने सख्त गोलीबारी नियंत्रण अपनाते हुए एम्बुश तक आतंकवादियों के आने का इंतजार किया। उन्होंने आतंकवादियों को पूर्णतः अचम्भे में डालकर 2345 बजे एम्बुश को उड़ाकर एक आतंकवादी को मार गिराया। अन्य आतंकवादी के बगल से आने की हरकत को देखकर मेजर आकाश सिंह ने पहल करते हुए शीघ्रता से उसे उलझा दिया। सघन गोलीबारी की लड़ाई में वह दूसरे आतंकवादी को गंभीर रूप से घायल करने में सफल रहे। इस लड़ाई में उनको छाती के दायी तरफ गोली लगी परंतु व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह किए बिना वह अंतिम श्वास तक आतंकवादी से लड़ते रहे।

मेजर आकाश सिंह ने आतंकवादियों के विरूद्ध लड़ाई में असाधारण साहस और वीरता का प्रदर्शन किया तथा भारतीय सेना की उच्च परंपराओं के अनुसार बलिदान दिया।

26. चन्द्रशेखर, पोवटर, सी डी-।।। (120351-ए) (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 21 सितंबर, 2009)

चन्द्रशेखर, पोवटर सी डी-।।। उस मार्कोस दल के सदस्य थे जिसे आतंकवादी रोधी आपरेशनों के लिए जम्मू-कश्मीर में तैनात किया गया था।

21 सितंबर, 2009 को मार्कोस के एक दल को उत्तरी कश्मीर के लाड्आ गांव के निकट तांगमुला जंगल के सामान्य क्षेत्र में 04 कट्टर एल ई टी तंजीम के आतंकवादियों की तलाशी और सफाया हेतु अत्यधिक जोखिमपूर्ण कार्य के लिए तैनात किया गया था।

दल ने अपने आप को अभ्यस्त किया तथा सम्पर्क क्षेत्र, अन्य घेराबंदी की स्थिति तथा आतंकवादियों की अंतिम ज्ञात हरकत के संबंध में गहन जानकारी प्राप्त की। घनी वनस्पतियों के कारण, दल ने दो-दो साथियों के जोड़े बनाकर तलाशी शुरू की तथा एक दूसरे के साथ सही-सही सम्पर्क बनाएं

रखा। दल को खून के धब्बे मिले जो इस बात का संकेत था कि आतंकवादी कहीं आसपास था और घायल था। शीघ्र आतंकवादियों की सही-सही स्थिति का पता लग गया तथा भारी गोलीबारी हुई। तथापि, दबोचे गए आतंकवादी ने साथी जोड़े पर अंधाधुंध गोलीबारी कर दी। चन्द्रशेखर के साथी ने गोलीबारी का जवाब दिया परंतु उनकी गर्दन में गोली लग गई और वह गिर गए। व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना अपने साथी को सुरक्षित बचा लेने के लिए रेंगकर आगे बढ़े तथा साथ ही दूसरे हाथ से गोलीबारी करके आतंकवादी को दबोचे रखा। इस निस्वार्थ शौयपूर्ण कार्रवाई से न केवल आतंकवादी हतप्रभ रह गए बल्कि उन्होंने उनमें से एक को घायल भी कर दिया। उन्हें बचाने की कार्रवाई के दौरान चन्द्रशेखर को आतंकवादी की गोली लगी तथा गंभीर रूप से घायल हो गए। बाद में चन्द्रशेखर धावों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए।

चन्द्रशेखर पोवटर सी डी-।।। ने अत्यधिक खतरे के समक्ष असाधारण साहस और पहल शक्ति का प्रदर्शन किया तथा अपने साथी के जीवन को बचाने में सर्वोच्च बलिदान किया।

(बरूण मित्रा)
संयुक्त सचिव

गृह मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 18 मार्च 2010

सं. 11024/01/2008-पी.एम.ए.--इस मंत्रालय की दिनांक 27 अगस्त 1969 की अधिसूचना संख्या 9/11/69-पी.-IV, दिनांक 19 अप्रैल, 1974 की संख्या 9/94/72-जीपीए-II, दिनांक 3 दिसम्बर, 1976 की संख्या 9/78/74-जीपीए-II (III), दिनांक 25 मार्च 1977 की संख्या 1/68/76-जीपीए-III, दिनांक 23 सितम्बर, 1989 की संख्या 11026/5/88-एनपीसी तथा दिनांक 8/8/2001 की संख्या 11022/6/2001-पी.एम.ए. के क्रम में तथा राष्ट्रपति सचिवालय की दिनांक 23 फरवरी, 1962 की अधिसूचना संख्या 30-पर्स/62 के अंतर्गत दिनांक 3 मार्च, 1962 को भारत के राजपत्र में अधिसूचित पुलिस (विशेष ड्यूटी) पदक प्रदान करने संबंधी नियमावली के नियम -I के अनुसरण में केन्द्र सरकार एतद्द्वारा यह निर्दिष्ट करती है कि एस.पी.जी. के सदस्य भी अपने छह वर्ष का कार्यकाल सफलतापूर्वक पूरा कर लिए जाने पर पुलिस (विशेष ड्यूटी) पदक प्राप्त करने के हकदार होंगे।

2. ये आदेश इसके जारी होने की तिथि से प्रभावी होंगे।

डी. के. कोटिया
संयुकत सचिव

रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड)

नई दिल्ली, दिनांक 18 मार्च 2010

सं. ईआरबी-I/2010/23/13--संयुक्त उद्यम (जेवी) के जरिए परियोजना के निष्पादन की संभाव्यता का पता लगाने संबंधी निर्देशों के साथ मरहोवरा में ग्रीनफील्ड डीजल इंजन विनिर्माण इकाई (डीएलएफ) और मधेपुरा में ग्रीनफील्ड बिजली इंजन विनिर्माण इकाई (ईएलएफ) स्थापित करने के लिए रेल मंत्रालय के प्रस्ताव आर्थिक मामलों संबंधी मंत्रीमंडल समिति (सीसीईए) द्वारा अनुमोदित किया गया है।

1.1 मंत्रीमंडल ने 18.02.2010 को आयोजित अपनी बैठक में अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगी बिडिंग (आईसीबी) के जरिए चयनित संयुक्त उद्यम भागीदारी के साथ संयुक्त उद्यम (जेवी) में इन इकाइयों को स्थापित करने संबंधी रेल मंत्रालय के प्रस्ताव को अनुमोदित कर दिया है। मंत्रीमंडल ने इन मॉडल दस्तावेजों के ढांचे के भीतर स्वीकृत परियोजना के विशिष्ट बदलावों के साथ सार्वजनिक निजी भागीदारी के लिए मॉडल आरएफक्यू और आरएफपी दस्तावेजों को अपनाते हुए दो स्तर की बिडिंग प्रक्रिया को अपनाने के लिए रेल मंत्रालय के प्रस्ताव को भी अनुमोदित कर दिया है। संयुक्त उद्यम भागीदार के चयन हेतु बोली प्रक्रिया आयोजित करने के लिए योजना आयोग के परामर्श से रेल मंत्रालय द्वारा तैयार प्रापण एवं अनुरक्षण करार (''एग्रीमेंट'') को भी मंत्रीमंडल द्वारा अनुमोदित कर दिया गया है।

1.2 मंत्रिमंडल ने ईएलएफ एवं डीएलएफ स्थापित करने के लिए भागीदारों के चयन हेतु बोलियां आमंत्रित करने के लिए मंत्रीमंडल द्वारा अनुमोदित प्रारूप करारों में प्री बिड सम्मेलनों के दौरान बोलीकर्ताओं द्वारा उठाए गए मुद्दों को ध्यान में रखते हुए

अनुमोदित बदलावों, यदि आवश्यक समझे जाएं, के लिए सशक्त समिति गठित करने संबंधी रेल मंत्रालय के प्रस्ताव को भी अनुमोदित कर दिया है, जिसमें निम्नलिखित शामिल होंगे :--

(i)	अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड	अध्यक्ष
(ii)	वित्त आयुक्त/रेलवे	सदस्य
(iii)	सदस्य बिजली, रेलवे बोर्ड	सदस्य
(iv)	सदस्य यांत्रिक, रेलवे बोर्ड	सदस्य
(v)	सचिव, आर्थिक मामलों संबंधी विभाग (वित्त मंत्रालय)	सदस्य
(vi)	सचिव, विधि कार्य विभाग विधि एवं न्याय मंत्रालय	सदस्य
(vii)	सचिव, योजना आयोग	सदस्य

2. तदनुसार, रेल मंत्रालय ने उपर्युक्त 1.2 में दर्शाए गए अनुसार मंत्रीमंडल द्वारा अनुमोदित घटकों एवं विचारार्थ विषयों के अनुसार सशक्त समिति गठित करने का विनिश्चय किया है।

3. समिति का मुख्यालय नई दिल्ली में होगा।

4. समिति के अध्यक्ष एवं सदस्य मौजूदा नियमों के अनुसार स्वीकार्य टीए/डीए पाने के पात्र होंगे।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प को सामान्य सूचना के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

शिवाजी रक्षित सचिव,
(रेलवे बोर्ड)

दिनांक 22 मार्च 2010

संकल्प

सं. ईआरबी-I/2009/23/22--श्री डैरेक ओ' ब्रेरेन, 158, प्रिंस अनवर शाह रोड, कोलकाता-700045 की अध्यक्षता में यात्री सेवा समिति को पुनर्गठित करते हुए रेल मंत्रालय के 16.07.2009, 12.11.2009 एवं 08.02.2010 के समसंख्यक संकल्प के आगे, रेल मंत्रालय ने अब विनिश्चय किया है कि इस समिति के सदस्य के रूप में पूर्व में नामित मो. नदीम सिराज, चैम्बर नं. 75, बिहार बार काउंसिल भवन, पटना उच्च न्यायालय, पटना के स्थान पर मो. नदीमुल हक़, द्वारा-अखबार-ए-मशरीक, 12, दरगाह रोड, कोलकाता-700017 को यात्री सेवा समिति के सदस्य के रूप में नामित किया जाए।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को सामान्य सूचना के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

शिवाजी रक्षित सचिव,
(रेलवे बोर्ड)

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January, 2010

No. 52–Pres/2010 – The President is pleased to approve the award of the "**Kirti Chakra**" to the under mentioned persons for the acts of conspicuous gallantry:-

1. **SHRI REL DEO SANGMA, CONSTABLE, MEMBER OF THE SPECIAL OPERATION TEAM, MEGHALAYA POLICE (POSTHUMOUS)**

[Effective date of the award: 07 December, 2008]

On December 7, 2008, Shri Rel Deo Sangma, Constable, Meghalaya Police, was given the task of arresting the 'Liberation of Achik Elite Force' (LAEF) militants. The assault party of 4 members approached the suspected house in the village by giving cover to each other. Shri Sangma who was on the front called out loudly to the hidden LAEF militants and asked them to come out and lay down their arms/weapons. Suddenly, there was firing from inside at the Police team. The team retaliated in self defence. Shri Sangma made a tactical move and jumped to a place from where he could see the militants and fired directly at them. He hit one of the militants and was able to neutralize him and asked his team to advance with him providing fire cover. In the mean time, the militants started running out and started indiscriminate firing at the police team in which one of the bullets hit Shri Sangma, as a result of which he died on the spot. During the encounter, Shri Sangma chose to be in the firing line and cleared the way for his other colleagues to intercept the militants. The slain militant was identified as a self styled commander of the LAEF. The Police team also managed to arrest one of the militants.

Shri Rel Deo Sangma displayed conspicuous gallantry, courage and made the supreme sacrifice in the call of duty.

2. **IC-65685 MAJOR PUSHPENDER SINGH, RAJPUTANA RIFLES / 28 ASSAM RIFLES**

[Effective date of the award: 06 March, 2009]

On 06 March 2009, Major Pushpender Singh, based on specific inputs about presence of top leadership of a terrorist group, launched a joint operation with Imphal Police Commandos in general area in Imphal, Manipur. In the process of establishment of inner cordon, police party was heavily fired upon and

pinned down by the terrorists at about 0130 hours on 07 Mar 2009. The officer quickly analysed the situation and cut off all escape routes. Showing inspirational leadership, he started advancing towards the target area where he spotted two terrorists firing indiscriminately. The officer narrowly missed certain death and in swift retaliation, with complete disregard to his personal safety charged onto the well entrenched two terrorists and shot them dead in hail of bullets from close quarters.

The officer crawled and personally lobbed grenade inside the hide out from where two more terrorists were firing on to the own troops. Suddenly, one terrorist came out and started firing all around indiscriminately. The officer immediately grabbed the opportunity and with sharp shooting skill, killed him on the spot. The valiant officer further crawled about 30 meters and lobbed another grenade and made forced entry to the hide out inspite of momentous peril to life. The terrorist hiding inside opened fire at the officer. The officer boldly charged at the terrorist and killed him. Thus the officer single handedly killed four top leaders of a terrorist group including its Chairman and his Deputy Chief.

Major Pushpender Singh showed inspirational leadership, aggressive spirit, raw courage and unparalleled bravery while fighting the terrorists.

3. **SHRI BHOPAL SINGH, SUB INSPECTOR (GENERAL DUTY), SASHASTRA SEEMA BAL (POSTHUMOUS)**

[Effective date of the award: 23 April, 2009]

On April 23, 2009, Shri Bhopal Singh, alongwith 9 other Sashastra Seema Bal personnel deployed at Warengdisha, NC Hills (Assam), moved towards 'Kalachand' where troops of 17th BN were stationed to collect communication equipments and other material. While returning to Warengdisha, an ambush took place and the party came under heavy firing from insurgents from both sides of the road near Maibong. Shri Singh in the face of imminent danger to his life promptly swung into action. He fired from the vehicle and then jumped down to counter the ambush. He led the troops constantly firing at the insurgents and successfully thwarted the attack. The insurgents had to flee from the spot.

In the operation, Shri Bhopal Singh sustained injury on his forehead and died a martyr's death on the spot. He not only saved the lives of his subordinates but also prevented loss of arms and ammunition and other Govt. stores.

Shri Bhopal Singh showed unparalleled valour and courage and laid down his life in fighting the insurgents.

4. **IC-61390 MAJOR SURESH SURI, KUMAON REGIMENT / 13 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)**

[Effective date of the award: 22 September, 2009]

Based on specific intelligence built by Major Suresh Suri, cordon around the suspected house in a village in Jammu & Kashmir was established on 22 September 2009 at 1430hrs.

Major Suresh Suri was part of inner cordon. He alongwith three Other Ranks entered the house to search for the hideout. On the second floor of house the officer found some suspicious loose planks of wood on the roof where the hideout was expected. The officer scaled the roof with his buddy to achieve surprise. They however came under heavy fire from the terrorists and got seriously injured. The officer despite being injured retaliated with fire from his Rifle AK-47 and also lobbed a hand grenade, killing one terrorist and injuring the other. The second terrorist took cover in the hideout and started firing indiscriminately, causing injuries to other personnel of the search party. The officer ensured safe evacuation of injured comrades before succumbing to his injuries.

Major Suresh Suri displayed most conspicuous act of bravery, comradarie and exemplary leadership in counter terrorist operation and made the supreme sacrifice while fighting the terrorists.

5. **MS. RUKHSANA KOSSER, SHAHDARA SHARIEF (MORHA KALSI), TEHSIL – THANAMANDI, DISTT.-RAJOURI, JAMMU & KASHMIR.**

&

6. **SHRI AJAZ AHMED, SHAHDARA SHARIEF (MORHA KALSI), TEHSIL – THANAMANDI, DISTRICT-RAJOURI, JAMMU & KASHMIR.**

[Effective date of the award: 27 September, 2009]

On September 27, 2009 at around 2130 hours, three dreaded militants of Lashker-e-Taiba forced entry into the house of Shri Noor Ahmed, resident of Shahdara Sharief, District-Rajouri, Jammu and Kashmir and started beating him and his family members mercilessly. His daughter Ms. Rukhsana Kosser and son Shri Ajaz Ahmed, who were sleeping in the adjoining room, came out and saw their parents being beaten mercilessly. One of the militants opened fire injuring the brother of Shri Noor Ahmed. Sensing danger to the lives of their family members, Ms. Rukhsana Kosser and Shri Ajaz Ahmed caught hold of axes/ lathies lying in the room and attacked the militants.One of the militants ran away.

Exhibiting courage, both sister and brother snatched the weapons from one of the militants and killed him on the spot. They took their family members to safety. The second militant, who was injured, managed to escape under cover of darkness. Later, it was revealed that the militant killed by Ms. Rukhsana Kosser and Shri Ajaz Ahmed was the Div. Commander of Lashker-e-Taiba was involved in lot of innocent civilian killing and numerous attacks on security forces.

Ms. Rukhsana Kosser and Shri Ajaz Ahmed exhibited exceptional bravery, presence of mind while fighting with dreaded armed militants.

(Barun Mitra)
Joint Secretary

No. 53–Pres/2010 – The President is pleased to approve the award of the "**Shaurya Chakra**" to the undermentioned persons for the acts of gallantry:-

1. **SHRI SANJAY BHAURAO SHINDE, LAXMI NARAYAN NAGAR, PUSAD, DISTRICT YAVATMAL, MAHARASHTRA (POSTHUMOUS)**

[Effective date of the award: 17 March, 2008]

On March 17, 2008, Shri Manikrao Rambhay Sadavarte, aged 58 years working as Cashier in Post Office Pusad, District Yavatmal, withdrew an amount of Rs. 3 Lakh from the State Bank of India and hired an auto-rickshaw. All of sudden, two unknown persons came and assaulted him with a sharp weapon and attempted to rob the cash. Looking at the gravity of the incident, the driver of the auto-rickshaw namely Shri Sanjay Bhaurao Shinde caught one of them. As Shri Shinde obstructed their attempt to loot, the miscreant stabbed him ruthlessly with their weapons. Shri Shinde received severe injuries but did not lose courage and held on to the miscreant and started shouting loudly. As a result of this, a number of people gathered there and the criminals could not rob the money. However, they managed to flee away. In the process, Shri Shinde succumbed to his injuries.

The gallant act of Shri Sanjay Bhaurao Shinde saved the life of the cashier of the post office and also prevented the robbing of Govt. money before making the supreme sacrifice while fighting the miscreants.

2. **GS -171792-K OPERATOR EXCAVATING MACHINERY PRITAM CHAND, BORDER ROAD ORGANISATION (POSTHUMOUS)**

&

3. **GS -173772-P DRIVER MECHANICAL TRANSPORT GRADE-II PIAR CHAND, BORDER ROAD ORGANISATION (POSTHUMOUS)**

[Effective date of the award: 12 January, 2009]

Operator Excavating Machinery Pritam Chand and Driver Mechanical Transport Grade-II Piar Chand were deployed for works at Km 465.00 on Akajan-Jonai road located in Dhemaji district of Assam which is highly infested with insurgent activities

On 12 Jan 2009 everyone in the camp went to their beds for sleeping after having dinner. When the generator was put off at 2100 Hrs, three unidentified insurgents entered into one of the barracks of this camp located at WMM Plant forcibly breaking the doors of the barrack. All three insurgents were armed with highly sophisticated weapons and tried to find out whereabouts of cash pertaining to labour payment, brought for disbursement and also about the manager. One of the GREF personnel who was sleeping close to the door replied negatively to their inquiry. Immediately one of the insurgent hit him on the forehead with butt due to which he became unconscious.

Seeing attack on one of the colleague, Driver Mechanical Transport Grade-II Piar Chand and Operator Excavating Machinery Pritam Chand spontaneously shouted and jumped over the insurgents to over power and catch them showing braveness and without caring for the consequences. In the meantime one of the insurgents opened fire indiscriminately at DVRMT Piar Chand and OEM Pritam Chand. Both of them suffered bullet injuries. While Piar Chand immediately fell on his bed, Pritam Chand, despite bullet injuries, chased the miscreants before getting collapsed. The courage shown by them compelled the miscreants to leave and fled away from the camp. This act of OEM Pritam Chand and DVRMT Piar Chand saved the Govt. money pertaining to labour payment from loss and also the precious lives of other colleagues who were sleeping inside the camp.

Operator Excavating Machinery Pritam Chand and Driver Mechanical Transport Grade-II Piar Chand displayed exceptional courage and made the supreme sacrifice while fighting the insurgents.

4. **IC-70145 LIEUTENANT SATBIR SINGH, SENA MEDAL, ARMY EDUCATIONAL CORPS / 12 MARATHA LIGHT INFANTRY, (POSTHUMOUS)**

[Effective date of the award: 18 March, 2009]

On 18 March 2009, at 2045 hours, Lieutenant Satbir Singh's patrol established a mobile check post in Imphal West district, Manipur.

Lieutenant Satbir Singh was commander of the covering party. From this group Sepoy Chandrakant was tasked to signal the vehicles to stop. While trying to stop a jeep, Sepoy Chandrakant was fired at by terrorists from the vehicle. He sustained gun shot wound on left thigh and fell on the road. Lieutenant Satbir Singh fired at the vehicle and pulled Sepoy Chandrakant to cover. During this, he sustained gun shot wound on left shoulder and armpit. He refused to be evacuated and ordered the search group to cover him and continued firing on the terrorists till he fell unconscious, thereby destroying the vehicle and forcing the terrorists to flee. Next day, during search, body of a slain terrorist with an AK-47 rifle was recovered.

Lieutenant Satbir Singh displayed conspicuous bravery, determined perseverance and camaraderie. To save his injured buddy, Lieutenant Satbir Singh killed an armed terrorist and laid down his life in the highest traditions of the Army.

5. **JC-520623 NAIB SUBEDAR NIRMAL SINGH, SENA MEDAL, DOGRA REGIMENT / 11 RASHTRIYA RIFLES**

[Effective date of the award: 02 April, 2009]

Naib Subedar Nirmal Singh participated in an operation in a village in district Kishtwar (J&K) on 02 April 2009.

JCO was part of column which established cordon at 02 April 2009 at 1100 hours around suspect house in the village. JCO personally established close cordon and was positioned nearest to the target house. At 1715hrs on 02 April 2009, one terrorist under intense covering fire from accomplice made desperate bid to escape by lobbing grenade at JCO. Displaying conspicuous bravery the JCO shot him at point black range. At 1730 hours another terrorist charged firing indiscriminately towards the stop. Realising danger to own troops, JCO unmindful of own safety fired a deadly accurate burst neutralising terrorist from just 25 yards who was later identified as Tehsil Commander of a outlawed terrorist outfit.

Naib Subedar Nirmal Singh, displayed exceptional operational zeal and conspicuous gallantry under intense terrorist fire.

6. **SS-39651 MAJOR AJAY SINGH, 11TH BATTALION THE MARATHA LIGHT INFANTRY**

[Effective date of the award: 06 April, 2009]

On 06 April 2009 about 1300 hours, Major Ajay Singh led a cordon and search party on specific intelligence about presence of terrorist in a village in district Kokrajhar, Assam.

Major Ajay Singh realising the gravity of the situation mustered his party without wasting time and planned to cordon the village from five different directions, thereby denying the terrorist any opportunity to escape. Seeing the movement of Army in close proximity the terrorist got flustered and tried to break through the cordon by firing and entered a bamboo grove close by. Major Ajay Singh immediately ordered cordoning of the grove while himself returning fire and inching closer. Sensing the disadvantage of fading light, he charged into the grove despite coming under fire and in an extremely daring act single handedly eliminated the terrorist at point blank range. The elimination of the

terrorist averted a major tragedy that could have befallen had he planted the Improvised Explosive Device. One Bulgarian made pistol alongwith ammunition, one kilogram explosives, detonators and other Improvised Explosive Device material were recovered from the terrorist.

Major Ajay Singh displayed act of conspicuous gallantry in the face of adversity, tenacity and exemplary raw courage unmindful of personal safety.

7. **IC-64074 MAJOR SHISHIR JUNEJA, ARMOURED CORPS / 8 RASHTRIYA RIFLES**

[Effective date of the award: 18 April, 2009]

Based on reliable inputs about presence of terrorists, Major Shishir Juneja established cordon around a village in district Doda, Jammu & Kashmir in the night of 17-18 April 2009. At around 0900hrs while carrying out house-to-house search the team came under heavy volume of fire from a locked house. Displaying keen tactical acumen he immediately re-organized his team covering all escape routes.

Displaying presence of mind and ingenuity to smoke out terrorists he closed in to the house lobbing smoke grenades and set fire to a stack of wet hay in turn, drawing heavy volume of fire. One terrorist jumped out of the window, charged firing to break cordon. Major Juneja retaliated displaying dogged determination killing him in hand to hand combat. With utter disregard to personal safety he swiftly entered the house through the window lobbed a grenade and charged at the second terrorist, Tehsil Commander of a terrorist outfit, killing him in close combat.

Major Shishir Juneja displayed conspicuous bravery and leadership, unflinching devotion to duty, audacity, valour and raw courage in the face of heavy hostile fire.

8. **9103039 RIFLEMAN SURAJ PRAKASH, JAMMU AND KASHMIR LIGHT INFANTRY/ 10 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)**

[Effective date of the award: 19 April, 2009]

Rifleman Suraj Prakash was part of battalion ghatak team. On 19 April 2009, on receipt of information of presence of dreaded terrorists in general area in Doda district, Jammu & Kashmir, battalion ghatak team was launched to eliminate them

While carrying out search, Rifleman Suraj Prakash volunteered for forced house entry that had no covered approach. While tactically approaching the target house, he came under accurate fire from the house. Though grievously injured, he

charged forward taking cover of the wall of the house. Covering fire of won party was adversely affected by heavy fire by the terrorists. With utter disregard to his personal safety and displaying raw courage, he crawled towards the open door and lobbed a grenade, rushed inside and killed one female terrorist. The second terrorist took cover and started firing indiscriminately on the soldier. Rifleman Suraj Prakash, not deterred with his serious injuries pounched on the terrorist with lightening speed and killed him in hand to hand combat. In the process of eliminating two hardcore terrorists in close combat, he sustained fatal injuries.

Rifleman Suraj Prakash displayed unmatched bravery, presence of mind, dogged determination and made the supreme sacrifice.

9. IC-63920 MAJOR DIPANKAR DEY, 39 ASSAM RIFLES

[Effective date of the award: 03 May, 2009]

On receiving specific intelligence regarding presence of armed terrorists in a village in Imphal West, Manipur, Major Dipankar Dey launched an operation on 03 May 2009 at 2130 hours.

While approaching the village, Major Dipankar Dey noticed suspicious movement of three to four persons astride jungle. On being challenged the persons started running towards the jungle while firing indiscriminately at the team with automatic weapons. Major Dipankar Dey immediately deployed the team tactically, brought down effective fire and pinned down the terrorists. During the ensuing fire fight which lasted for about fifty minutes, the terrorists hurled grenades towards Major Dipankar Dey to break contact.

To break the impasse Major Dipankar quickly organized a small team and disregarding personal safety, moved to the flank of the hidden terrorists under heavy hostile automatic fire and hurled grenades at terrorists and simultaneously ordered to fire illumination from 2" mortar, resulting in dislodging them and giving away their position. Finding themselves exposed the terrorists started running into the jungle. Displaying exceptional courage and conspicuous bravery, Major Dipankar chased and personally shot down two terrorists with precision fire from close quarters while others managed to escape.

Major Dipankar Dey displayed exceptional leadership, dogged determination and exceptional courage under heavy hostile fire and eliminated two hardcore terrorists.

10. **IC-61038 MAJOR HARMEET SINGH SAMRA, RAJPUT REGIMENT / 10 RASHTRIYA RIFLES**

[Effective date of the award: 08 May, 2009]

On 08 May 2009, based on specific information about two terrorists, Major Harmeet Singh Samra established a tight cordon around a suspect house in district Doda, Jammu & Kashmir. Displaying presence of mind and ingenuity he evacuated all civilians. He then carried out detailed meticulous search of the house, thereby discovering an ingeniously concealed hideout inside a wooden almirah. Initiating contact, he drew heavy fire from the terrorists, which resulted in splinter injury on head to his buddy. With utter disregard to personal safety, he rushed and pulled his buddy out inspite of heavy fire. The dreaded self styled Divisional Commander of a terrorist outfit, lobbed grenades and charged out firing at the officer. Displaying nerves of steel the officer retaliated, exhibiting fierce dogged delimitation, killing the dreaded terrorist in hand to hand combat. Displaying raw courage, the officer entered the house after lobbing grenade and charged at second terrorist and killed him in close combat.

Major Harmeet Singh Samra displayed outstanding leadership qualities, valour, tenacity, audacity, indomitable courage in the face of hostile fire.

11. **G/114735 HAVILDAR THANGJALET, 11 ASSAM RIFLES (POSTHUMOUS)**

[Effective date of the award: 12 May, 2009]

On 12 May 2009, based on input regarding movement of militants in general area in Tamenglong, Manipur, two operational columns were launched to carry out area domination in the village. Havildar Thangjalet was part of the operational column under Naib Subedar Mohan.

At approximately 2000 hours on 12 May 2009 while the leading column was approaching the Village it came under effective small arms fire of militants. The second column under Naib Subedar Mohan was tasked to occupy dominating height and engage the under grounds firing towards the leading column. Havildar Thangjalet, who was manning the Light Machine Gun, moved under cover of darkness and took position behind a thick tree trunk from where he effectively engaged the militants.

At approximately 1030 hours on 13 May 2009, Havildar Thangjalet observed few undergrounds moving towards Khongbung High Ground. He took aimed fire and shot down two undergrounds on the spot. The militants immediately retaliated with heavy fire that caused multiple bullet injuries to Havildar Thangjalet. He was asked by his buddy to pull back to a safe location,

however, he refused and with utter disregard to his personal safety continued firing thereby injuring two more undergrounds. He kept on firing from his weapon till he became unconscious due to profuse bleeding. He later succumbed to his injuries during his evacuation.

Havildar Thangjalet displayed conspicuous bravery, undaunting courage and fearless determination in fighting the terrorists and made the supreme sacrifice.

12. **SS-41214 MAJOR JUGMAL SINGH VAGHELA, 11TH BATTALION THE JAT REGIMENT**

[Effective date of the award: 22 May, 2009]

Based on specific input regarding impending infiltration attempt by a group of terrorists, an operation was launched in general area in Kupwara district, Jammu & Kashmir.

On 22 May 2009, Major Jugmal Singh Vaghela led by example the team that foiled infiltration bid by three armed foreign terrorists. The officer on observing three heavily armed terrorists in area astride Green Patch retained wits and let them move 30 meters into the killing area. Displaying perseverance, composure and maintaining complete surprise the officer killed one terrorist with first aimed shot followed by heavy volume of fire. Two terrorists ran and took cover behind thick trees and boulders and continued retaliating with indiscriminate firing. Completely undeterred and disregarding his personal safety the officer displaying highest standards of field craft crawled under hostile fire to block terrorist's escape route towards line of control. After closing in he lobbed hand grenades on terrorists from an advantageous position resulting in climination of another terrorist in close quarter battle.

Major Jugmal Singh Vaghela displayed act of conspicuous bravery, exemplary courage and leadership qualities in the face of heavy odds.

13. **IC-64088 CAPTAIN PAURUSH PRADHAN, KUMAON REGIMENT / 26 RASHTRIYA RIFLES**

[Effective date of the award: 05 June, 2009]

Captain Paurush Pradhan was tracking the move of three hardcore terrorists in Doda district, Jammu & Kashmir. He employed innovative means to gather intelligence and operate. The officer carried out protracted interaction with the brother of a terrorist and finally convinced him to arrange a meeting. On 05 June 2009 the officer led a column to the hideout. On reaching, the officer appreciated the terrain and established an innovative cordon of the hideout thereby cutting out all likely escape routes. Subsequently at first light he resited the cordon.

The terrorists came out of the hideout unsuspectingly. On seeing the security forces, the terrorists opened indiscriminate fire. Seeing the gravity of the situation and exposing himself to the fire of the terrorist, the officer lobbed a grenade and neutralized one terrorist. Thereafter another terrorist came out of the hideout towards the officer firing indiscriminately. Captain Pradhan immediately came out in open and neutralized him from point blank range.

Captain Paurush Pradhan displayed conspicuous act of bravery, exemplary leadership, commitment to duty and fierce guts.

14. **IC-59470 MAJOR MANOJ ARUPARAYIL POTHEN, SENA MEDAL, 4TH BATTALION THE SIKH LIGHT INFANTRY**

[Effective date of the award: 07 June, 2009]

On 07 June 2009 at around 2000 hours, based on information regarding movement of terrorists in general area Nij Depheli, a well deliberated, orchestrated plan was made to establish multiple ambushes in general area in district Baksa, Assam to trap the terrorists. Major Manoj Aruparayil Pothen was commander of one of the ambush parties placed at likely escape routes. At around 2330 hours the officer ambush party's closed on to the terrorist's area, two personnel were observed movement suspiciously. On being challenged the personnel tried to flee and fired on the ambush party to break contact.

Major Manoj Aruparayil Pothen immediately alerted his party displaying exemplary presence of mind. The terrorists realizing that they had been trapped, fired on the party and lobbed grenades to break contact. The officer tactically repositioned himself and his party to chase the fleeing terrorists. With utter disregard to his own personal safety showing courage of highest order the officer chased and neutralised two terrorists. A large cache of arms and ammunition were recovered from the terrorists.

Major Manoj Aruparayil Pothen displayed bravery, indomitable courage to follow in fighting the terrorists.

15. **4478544 LANCE NAIK DAVINDER SINGH, 4TH BATTALION THE SIKH LIGHT INFANTRY**

[Effective date of the award: 14 June, 2009]

Based on specific information about movement of terrorists with arms and ammunition in general area in district Baksa, Assam, a cordon and search operation was launched. At around 2330 hours on 13th June, 2009 stops established on all routes of ingress and egress.

At approx 1100 hours on 14 June 2009, own source confirmed the presence of terrorists in a bamboo grove in the outskirts of village Dakshin Jhargaon. Captain Anmol Bhargava and his party moved tactically and started cordoning the bamboo grove. The terrorist on spotting the army started firing indiscriminately and tried to break the cordon. Lance Naik Davinder Singh, showing exemplary courage and presence of mind took advantage of covering fire being provided by Capt Anmol Bhargava, repositioned himself and brought down two terrorists by accurate fire. The remaining terrorists realizing the futility of fire fight, tried to flee away. Lance Naik Davinder Singh showing bravery of highest order, chased the fleeing terrorists and neutralized one more terrorist by accurate fire. A large cache of arms and ammunitions were recovered from the terrorists.

Lance Naik Davinder Singh displayed exemplary act of an exceptionally high order of bravery, indomitable courage to follow and neutralise three terrorists.

16. **IC-63580 CAPTAIN MUDASSAR IQBAL, 2ND BATTALION THE BIHAR REGIMENT**

[Effective date of the award: 17 June, 2009]

Captain Mudassar Iqbal, systematically and relentlessly developed intelligence network for three months around hard core terrorists of a dreaded terrorist outfit operating in Assam-Arunachal Pradesh Border, who were involved in killing of innocent people, police personnel, sabotage and extortion in Dhemaji district.

On 16 June 2009 reliable information was received regarding presence of the terrorist along with two armed cadres in a village in Dhemaji district of Assam. The source explained the target area 3 kilometres short, for fear of being detected. Captain Mudassar Iqbal with intimate knowledge of terrain planned a meticulous operation and approached target area walking through dense jungle around midnight. As strike team reached suspected house, terrorists opened indiscriminate fire on him at close range. Undeterred, displaying nerves of steel and indomitable courage, the officer retaliated with effective fire, closed on the terrorist amid volley of bursts and single handedly shot dead the dreaded who was engaging the officer with AK 56 rifle.

Meanwhile, the second party engaged terrorists from other side. On being trapped, a terrorist broke contact and taking cover of darkness tried to flee while firing heavily at own party. Captain Mudassar Iqbal and his buddy with utter disregard to personal safety, displaying rare courage and determination chased him for 300 meters, closed on and shot him dead after fierce encounter.

Captain Mudassar Iqbal displayed raw courage, undaunted bravery beyond the call of duty and decimated two terrorists single handedly.

17. **IC-46936 LIEUTENANT COLONEL SANJAY KAUSHIK, MADRAS REGIMENT / 8 RASHTRIYA RIFLES**

[Effective date of the award: 01 July, 2009]

On 01 July 2009 at 1300hrs, Lieutenant Colonel Sanjay Kaushik leading the Battalion Ghatak column, moved on reliable input about presence of four terrorists in a house at a village in district Doda, Jammu & Kashmir. On the spot interrogation provided input that the terrorists were likely hiding in the adjoining forest. The officer displayed tactical acumen by immediately resiting the cordon and coordinating a two pronged probe to locate terrorists in the forest which had dense foliage and steep slopes. On being probed the terrorists fired on own parties and spread along a nala, covered with big boulders and dense foliage. The firefight continued in heavy rainstorm for approx two hours, when the officer anticipating approaching fading light, crawled forward from a flank against heavy fire and charged after throwing grenades. Disregarding personal safety, he closed in and killed two terrorists from point blank range and facilitated neutralization of the third terrorist.

Lieutenant Colonel Sanjay Kaushik displayed audacity, raw courage, leadership of a very high order in face of terrorists' fire and killed two hardcore terrorists.

18. **IC-63409 MAJOR NN VENKATA SRIRAM, MADRAS REGIMENT / 8 RASHTRIYA RIFLES**

[Effective date of the award: 17 July, 2009]

On 17 July 2009, based on reliable inputs about presence of terrorists, Major NN Venkata Sriram displaying keen tactical acumen, established effective cordon around suspected houses at a village in Doda district, Jammu & Kashmir, blocking all escape routes.

After first light, while searching the suspected houses, the team came under heavy volume of automatic fire. Displaying presence of mind and ingenuity to smoke out terrorists, Major Sriram alongwith his buddy closed in to the house and lobbed grenades and threw burning sacks through a window. While doing this, when one terrorist fired at him from the window, the officer holding his nerves, swiftly retaliated, shooting him dead from point blank range. Thereafter, he swiftly entered the house through the window and charged at the second terrorist, Section Commander of a terrorist outfit, killing him in close combat.

Major NN Venkata Sriram displayed unflinching devotion to duty, audacity, leadership of a very high order, valour and raw courage in the face of heavy hostile fire and killed two terrorists besides facilitating apprehension of a female terrorist.

19. **IC-57255 MAJOR KUMAR ANKUR, SENA MEDAL, 12TH BATTALION THE BIHAR REGIMENT**

[Effective date of the award: 27 July, 2009]

Based on specific surveillance input regarding impending infiltration attempt by a group of terrorists an operation was launched in general area in Kupwara district, Jammu & Kashmir.

On 27 July 2009, Major Kumar Ankur, led by example the team that foiled infiltration bid by three armed foreign terrorists. The officer on observing three heavily armed terrorists in general area retained wits and let them move into the killing area. Displaying perseverance, composure and maintaining complete surprise the officer killed one terrorist with first aimed shot. Two terrorists ran and took cover behind big boulders and continued retaliating with indiscriminate firing. Completely undeterred and disregarding his personal safety the officer crawled under hostile fire to block terrorist's escape route towards line of control. After closing in, he lobbed hand grenades on terrorists from an advantageous position resulting in elimination of another terrorist in close quarter battle.

Major Kumar Ankur, displayed act of conspicuous bravery and valour with tactical acumen and leadership qualities in the face of heavy odds.

20. **IC-65220 MAJOR JEEVAN B, 11TH BATTALION THE JAT REGIMENT**

[Effective date of the award: 04 August, 2009]

Based on hard intelligence by a unit source, Major Jeevan B planned and discreetly deployed small mission oriented teams along appreciated route of infiltration by terrorists in Kupwara district, Jammu & Kashmir.

At 1930 hours on 04 August 2009 on spotting the terrorists, the officer retained composure, maintained surprise and sprung the ambush bringing down one terrorist with aimed fire. As the dark hours set in, intermittent fire exchange between terrorists and own men continued throughout the night. At first light Major Jeevan B commenced the search and came under heavy effective terrorist fire from the initial contact sight. Undeterred and retaining balance under adversity the officer retaliated fire after taking cover and killed one terrorist.

While searching further, he again came under indiscriminate fire from extremely close range from the second terrorist hiding behind a big fallen tree. Under covering fire from his buddy the officer displaying exceptional raw courage crawled under hostile fire and eliminated the second terrorist in close quarter battle.

Major Jeevan B displayed exemplary courage, conspicuous bravery and exceptional leadership while fighting the terrorists.

21. **IC-63809 CAPTAIN TUSHAR DHASMANA, 6TH BATTALION THE PARACHUTE REGIMENT**

[Effective date of the award: 07 August, 2009]

Based on intelligence Captain Tushar Dhasmana laid an ambush in general area in Bandipore district, Jammu & Kashmir.

At 1830 hours on 07 August 2009 the officer noticed movement of terrorists in the Nala at close range. He assessed that alerting the ambush parties would jeopardize the operation so he and his buddy sidestepped from their location and surprised the terrorists. The terrorists immediately opened fire and attempted to escape. The officer held on to his nerve and expeditiously returned fire instantly killing one terrorist. The remaining terrorists ran downstream. The officer sensing the need, jumped out from his position and fearlessly moved with his buddy to cut off the escaping terrorists. Displaying exemplary calmness and steely grit he closed in with the terrorists and shot dead the second terrorist at extreme close range. Just at that moment the third terrorist attempted to target the officer from his rear. With lightning reflexes the officer lobbed a grenade onto the hiding terrorist and followed it by a volley of fire resulting in his elimination.

Captain Tushar Dhasmana displayed act of conspicuous bravery and indomitable courage of high order while fighting the terrorists.

22. **IC-67238 CAPTAIN LOKESH KUMAR, 9TH BATTALION THE PARACHUTE REGIMENT (SPECIAL FORCES)**

[Effective date of the award: 10 August, 2009]

Captain Lokesh Kumar was tasked to lay multiple ambushes in a remote area in the Pir Panjal ranges in district Reasi, Jammu & Kashmir.

On 10 August 2009 at 0530 hours, Captain Lokesh Kumar having maintained absolute surprise, noticed movement of three terrorists away from his ambush position. Displaying a high level of initiative and aggression, the officer

maneuvered his squad and closed in with the terrorists. At the opportune moment, Captain Lokesh Kumar opened accurate fire, killing one terrorist on the spot. The remaining terrorists though taken by surprise, brought down indiscriminate fire on own troops. Sensing danger to his troops, Captain Lokesh Kumar moved under fire to a vantage position and killed the second terrorist at close range. The exemplary action of Captain Lokesh Kumar galvanized his squad to kill the third terrorist after an intense firefight.

Captain Lokesh Kumar displayed dynamic leadership and conspicuous gallantry in the face of intense terrorist fire and eliminated all three top hardcore terrorists.

23. **IC-60656 MAJOR ANUJ SINGH, BRIGADE OF THE GUARDS / 59 RASHTRIYA RIFLES**

[Effective date of the award: 14 August, 2009]

Based on a long term innovative and surgical intelligence plan, Major Anuj Singh launched an operation against hardcore terrorists in Reasi district, Jammu & Kashmir. The officer undertook an extremely difficult approach to target area in upper reaches of Pir Panjal Mountains, in rugged inhospitable terrain, involving high risk to life owing to mountaineering odds where he established a surveillance point for over five days without any replenishment. On 14 August 2009 at 1645 hours observing suspicious movement, when Major Anuj Singh challenged, he came under heavy terrorist fire. He immediately retaliated and killed one terrorist. Remaining three terrorists took cover behind some rocks and started to engage own troops with heavy fire. Sensing danger to own troops, Major Anuj Singh crawled forward and killed another terrorist. Remaining two terrorists were later eliminated by the small team. Terrorists killed were later identified as top leaders of a dreaded terrorist outfit.

Major Anuj Singh displayed act of exceptional bravery and leadership with total disregard to his life while fighting the terrorists.

24. **IC-69343 CAPTAIN ANOOP PANDEY, 4TH BATTALION THE RAJPUT REGIMENT**

[Effective date of the award: 22 August, 2009]

Captain Anoop Pandey was the leader of a small quick reaction team with seven Other Ranks. On receipt of information about a likely infiltration bid close to line of control in Kupwara district, Jammu & Kashmir, at an altitude of approximately 13000 feet, he launched his group for a possible contact.

At 1910 hours on 22 August 2009, in the fading light suspicious movement of terrorists was noticed. Exercising great restraint and tactical acumen he allowed the terrorists to get close to the ambush and in the process injured one.

The injured terrorist took effective cover and brought down accurate fire on own ambush. In an exhibition of great courage, leadership and battle craft he out manoeuvred terrorist and eliminated him.

The other terrorist was desperate and was effectively blocking the progress. Assessing the situation and under cover of fire of his group, Capt Anoop Pandey closed on to the terrorist, lobbed a grenade and then in close combat eliminated him.

Captain Anoop Pandey displayed act of bravery and raw courage at the peril of his own safety in fighting the terrorists.

25. **IC-56413 MAJOR AKASH SINGH, 5TH BATTALION THE MARATHA LIGHT INFANTRY (POSTHUMOUS)**

[Effective date of the award: 08 September, 2009]

On 08 September 2009, after receiving information of infiltration attempt in general area in Mendhar Sector, district Poonch, Jammu & Kashmir, Major Akash Singh quickly laid ambush at Rocket Support by 2210 hours. Displaying astute courage he waited for the terrorists to close in to the ambush by exercising strict fire control. He sprung ambush at 2345 hours to the complete surprise of the terrorists and killed one terrorist. Observing outflanking movement of other terrorist and sensing danger, Major Akash Singh took the initiative and swiftly moved to effectively engage him. In the ensuing intense and close exchange of fire with the terrorist he succeeded in grievously injuring the second terrorist. In this process, he suffered gun shot wound on right side of chest but with utter disregard to his personal safety, he continued to engage the other fleeing terrorists till his last breath.

Major Akash Singh displayed exceptional courage and bravery in close combat while fighting the terrorists and made the supreme sacrifice in the finest traditions of the Indian Army.

26. **CHANDRA SHEKHAR, POWTR CD III, (120351-A) (POSTHUMOUS)**

[Effective date of the award: 21 September, 2009]

Chandra Shekhar, POWTR CD III was part of the MARCOS team which was deployed in Jammu & Kashmir for counter terrorist operations.

On 21 September 2009 a team of MARCOS were deployed in a highly vulnerable task to search and destroy 04 hardcore LET tanzeem terrorists in general area of Tangmulla forest near Ladua village in north Kashmir. The entire

area is thickly vegetated with heavy undergrowth restricting visibility to barely 10-12 feet.

The team familiarised itself and carried out a deliberate briefing of the contact area, position of the other cordons and the last known movement of the terrorists. Due to the dense vegetation, the team carried out the search in buddy pairs maintaining surprise and positive communication with each other. The team found blood trails indicating that the terrorist was in close vicinity and likely wounded. Soon the terrorists' position was zeroed in and heavy firefight ensued. However, the pinned down terrorist fired indiscriminately at the buddy pair. The buddy pair of Chandra Shekhar retaliated and in the ensuing fire fight, the buddy was shot on the neck and collapsed. Chandra Shekhar with total disregard to his personal safety crawled and evacuated him to relative safety, simultaneously pinning down the terrorist through retaliatory fire with the other hand. This gallant action of selflessness not only surprised the terrorists but also inflicted fatal injury to one of them. During the evacuation, Chandra Shekhar was shot by the terrorist and was seriously injured. Later Chandra Shekhar succumbed to his injuries.

Chandra Shekhar, POWTR CDIII displayed exceptional courage and initiative in the face of great danger and made supreme sacrifice in saving the life of his buddy.

(Barun Mitra)
Joint Secretary ~~to the President~~

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

New Delhi, the 18th March 2010

No.11024/01/2008-PMA—In continuation to this Ministry's Notification No. 9/11/69-P. IV, dated 27th August, 1969, No. 9/94/72-GPA. II dated 19th April, 1974, No. 9/78/74-GPA. II (III) dated 3rd December, 1976, No. 1/68/76-GPA. III dated 25th March, 1977, No. 11026/5/88-NPC dated 23rd September, 1989 and No. 11022/6/2001-PMA dated 08.08.2001 and in accordance with the Rule 1 of the Rules governing the award of Police (Special Duty) Medal notified in the Gazette of India of 3rd March, 1962 under the President's Secretariat Notification No. 30-Pres/62 dated 23rd Feb., 1962, the Central Government hereby specify that the Members of SPG will also be eligible for the award of the Police (Special Duty) Medal on successful completion their tenure of six years in SPG.

2. these orders will take effect from the date of their issue.

D. K. NOTIA
Jt. Secy.

MINISTRY OF RAILWAYS
(RAILWAY BOARD)

New Delhi, the 18th March 2010

No. ERB-I/2010/23/13—The proposal of Ministry of Railways to set up a Greenfield Diesel Locomotive manufacturing unit at Marhowra (DLF) and a Greenfield Electric Locomotive manufacturing unit at Madhepura (ELF) with the direction to explore the possibility of executing the project through Joint Venture (JV) has been approved by Cabinet Committee on Economic Affairs (CCEA).

1.1 In its meeting held on 18.02.2010, Cabinet has approved the Ministry of Railway's proposal to set up these units in Joint Venture (JV) with JV partners selected through International Competitive Bidding (ICB). Cabinet has also approved the Ministry of Railway's proposal to follow the two stage bidding process adopting the Model RFQ and RFP documents for PPP projects with project specific changes permitted within the framework of these Model documents. The Procurement-cum-Maintenance Agreement ("Agreement"), prepared by the Ministry of Railways, in consultation with Planning Commission, has also been approved by the Cabinet for conducting the bid process for selection of the JV partner.

1.2 Cabinet has also approved the proposal of the Ministry of Railways to constitute an empowered committee to approve changes, if deemed necessary in view of the issues raised by bidders during pre-bid conferences, in the

draft agreements approved by the Cabinet for invitation of bids for selection of partners to set up ELF and DLF, comprising of the following:—

(i)	Chairman, Railway Board	Chairman
(ii)	Financial Commissioner/Railways	Member
(iii)	Member Electrical, Railway Board	Member
(iv)	Member Mechanical, Railway Board	Member
(v)	Secretary, Department of Economic Affairs, (M/o Finance)	Member
(vi)	Secretary, Department of Legal Affairs (Ministry of Law & Justice)	Member
(vii)	Secretary, Planning Commission	Member

2. Accordingly, Ministry of Railways have decided to constitute an empowered Committee as per the composition and Terms of reference approved by Cabinet as mentioned in 1.2 above.

3. The headquarter of the Committee will be at New Delhi.

4. The Chairman and Members of the Committee will be eligible to draw TA/DA as admissible under the extant rules.

ORDER

Ordered that the Notification be published in the Gazette of India for general information.

SHIVAJI RAKSHIT, Secy.
(Railway Board)

The 22nd March 2010

RESOLUTION

No. ERB-I/2009/23/22—Further to Ministry of Railways' Resolutions of even number dated 16.07.2009, 12.11.2009 & 08.02.2010 reconstituting the Passenger Services Committee under the Chairmanship of Shri Derek O'Brien, 158, Prince Anwar Shah Road, Kolkata-700029, Ministry of Railways have now decided that Mohammed Nadimul Haque, C/o Akhbar-e-Mashriq, 12, Dargah Road, Kolkata-700017 should be nominated as member of the Passenger Services Committee in place of Mohd. Nadim Seraj, Chamber No. 75, Bihar Bar Council Bhawan, Patna High Court, Patna, Nominated earlier as one of the Members in this committee.

ORDER

Ordered that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

SHIVAJI RAKSHIT, Secy.
(Railway Board)

प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 2010
PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 2010